रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-04, कुल पृष्ठ-36, पौष-माघ, विक्रम सम्वत् 2079, जनवरी, 2023

भजन प्रतियोगिता

रोहिणी में रक्तदान शिविर

दिल्ली के सभी छोटे-बड़े अस्पताल आजकल रक्त की किल्लत से जूझ रहे हैं। दिल्ली में डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया जैसी जानलेवा बीमारियों का प्रकोप इस मौसम में बढ़ गया है और इस प्रकार की बीमारियों में इलाज के लिए रक्त की बहुत आवश्यकता होती है। इस समय राजधानी के अस्पतालों में कोविड संक्रमण न फैल जाए इसलिए वहां पर रक्तदान शिविर भी नहीं लग पा रहे हैं। इसे देखते हुए महाराजा अग्रसेन संस्थान के संस्थापक डॉ. नंद किशोर गर्ग की प्रेरणा से रक्त की कमी को पूरा करने के लिए रोहिणी सेक्टर-22 स्थित महाराजा अग्रसेन प्रबंधन संस्थान के युवा छात्र रक्तदान करने के लिए आगे आए हैं। 1 दिसम्बर, 2022 को संस्थान में रक्तदान शिविर लगाकर 65 यूनिट रक्त जमा किया गया। संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. नन्द किशोर गर्ग ने कहा कि रक्तदान महादान है और एक यूनिट रक्त से चार मरीजों की जान बचाई जा सकती है। डॉक्टर गर्ग के अनुसार उनकी संस्था महाराजा अग्रसेन जी के बताए सिद्धांतों पर चलते हुए समाज सेवा के कार्यों में हर समय संलग्न रहती है। शिविर के संयोजक मोहन गर्ग और अतुल सिंघल ने बताया कि कॉलेज में हर साल नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की जयंती 23 जनवरी को रक्तदान शिविर लगाकर कैकड़ों यूनिट रक्त विभिन्न अस्पतालों और ब्लड बैंकों को उपलब्ध करवाया जाता है। इस बार आपातकालीन परिस्थिति में डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में खून की ज्यादा मांग और उपलब्धता में कमी को देखते हुए संस्थान के युवाओं ने एनसीसी और एनएसएस के कैडिट्स बहुत ही संक्षिप्त सूचना पर आगे आए और बढ़-चढ़कर रक्तदान किया। राम मनोहर लोहिया अस्पताल के ब्लड बैंक के प्रमुख डॉ डी. एस चौहान के अनुसार सर्दियों के मौसम में रक्तदान शिविर लगने कम हो जाते हैं। जबकि डेंगू जैसी बीमारी फैली हुई है। ऐसे में ब्लड बैंक में खून की कमी हो जाती है। डॉक्टर चौहान ने रक्तदान शिविर लगाने के लिए महाराजा अग्रसेन प्रबंधन संस्थान का धन्यवाद किया। रक्तदान शिविर में संस्थान के प्रबंधन समिति के संयुक्त सचिव मोहन गर्ग, सचिव रजनीश गुप्ता, निदेशक प्रो रजनी मल्होत्रा ढींगरा, प्रो. उमेश पाठक व जनसंपर्क अधिकारी राकेश ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि एनसीसी ओर एनएसएस का ध्येय ही समाज सेवा है, जिसको संस्थान के छात्र अपने जीवन में उतार रहे हैं। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के साथ ही उन्नत भारत अभियान एनसीसी, विधि मित्र, प्रो बोनो क्लब और यूथ रेडक्रॉस की प्रमुख भूमिका रही।

कालकाजी में गीता जयंती

भगवान की असीम कृपा से 3 दिसम्बर, 2022, मोक्षदा एकादशी के दिन गीता परिवार एवं सेवा भारती दक्षिणी विभाग, दिल्ली के तत्वावधान में सेवा भारती सुधार कैंप, बस्ती विकास केन्द्र, कालकाजी, नई दिल्ली पर गीता जयन्ती उत्सव बड़े ही धूमधाम से एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सेवा भारती दक्षिणी विभाग के सर्वश्री अनंगपाल जी, इन्द्रनील जी, दिनेश जी, सतीश माहेश्वरी जी, आचार्य प्रेमलता जी एवं अन्य कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही। गीता परिवार की ओर से आरती सूद दीदी, सतीश भैया, सुशीला माहेश्वरी दीदी ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी । टीन्स फॉर सेवा के बच्चों द्वारा गायत्री मंत्र एवं कल्याण मंत्र गाया गया। श्रीमद्भगवद्गीता जी के 12 वें अध्याय का पठन किया गया तथा गीता मैया की भावपूर्ण आरती की गई । कार्यक्रम में नन्हें बच्चों से लेकर सभी आयु वर्ग के लगभग 100 साधक उपस्थित रहे।

कुष्ठ आश्रम के लिए सहयोग

सेवा भारती द्वारा संचालित प्रकल्प ताहिर में कुष्ठ रोगियों के सेवार्थ प्रो0 आनन्द कुमार द्वारा डॉ. हरेन्द्र जी (सेवा भारती के कार्यकर्ता) को चेक राशि प्रदान करते हुए। प्रो. आनन्द समय-समय पर सहयोग करते रहते हैं। इस सहयोग के लिए सेवा भारती की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद।

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-04, कुल पृष्ठ-36, जनवरी, 2023

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
प्रांत भजन मण्डली प्रतियोगिता संपन्न	डॉ. संगीता त्यागी	06
विज्ञान और प्रकृति से कोसों दूर है ग्रेगरियन कैलेंडर	नरेन्द्र सहगल	08
सखि ! वसंत आया	पंकज साहा	10
अहिल्याबाई का न्याय	हेमन्त शर्मा	13
पतिव्रता स्त्री की शक्ति	प्रतिनिधि	14
यौनकर्मियों के लिए 'उत्कर्ष' के नाम से क्लिनिक का शुभारंभ		15
विविधता में एकता .... मकर संक्रान्ति पर्व	आचार्य मायाराम 'पतंग'	16
वीर गुरुपुत्रों के बलिदान और मुगलिया दहशतगर्दी	नरेंद्र सहगल	17
वार्षिक राशिफल : 2023	आचार्य भजनानंद	19
समग्र स्वास्थ्य की देखभाल आवश्यक	गिरीश्वर मिश्र	23
कविता: अस्सी हो गए अस्सी पार	कृष्ण लाल भाटिया 'शिक्षार्थी'	26
कहानी: मन की गाँठ	विजय कुमार	27
अंदर की उमंगें बनाती हैं युवा	प्रतिनिधि	31
संत शिरोमणि रविदास	भूषण लाल पाराशर	33

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

स्वामी विवेकानंद जी का सेवा-दर्शन

हर वर्ष 12 जनवरी को 'युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। यह दिवस स्वामी विवेकानंद जी को समर्पित है। बता दें कि 12 जनवरी, 1863 को स्वामी विवेकानंद जी का जन्म हुआ था। उन्होंने मात्र 39 वर्ष की आयु में 4 जुलाई, 1902 को इस नश्वर शरीर को त्याग दिया था। इस युवा संत का जीवन समस्त मानव समाज, विशेषकर युवाओं को प्रेरित करने वाला है। इसलिए उनके जन्मदिन को युवा दिवस के रूप में पूरा भारत मनाता है।

स्वामी विवेकानंद जी मानव की सेवा को ही सबसे बड़ा धर्म मानते थे। उनका आदर्श वाक्य है- 'नर सेवा : नारायण सेवा।' हर मानव भगवान का ही स्वरूप है। स्वामी जी ने कहा है, "भूलना नहीं कि अज्ञानी, दरिद्र, निम्न कही जाने वाली जातियों के लोग (मेहतर, चमार, महार आदि) सब तुम्हारे ही भाई हैं। उनमें भी तुम्हारे ही जैसा रक्त-मांस है। हे वीरो! साहस का अवलंबन करो। गर्व से कहो मैं हिंदू हूँ। प्रत्येक भारतीय मेरा सगा भाई है। चिल्लाकर कहो कि प्रत्येक भारतवासी, चाहे वह अज्ञानी, दरिद्र हो, ब्राह्मण हो या चांडाल हो, सभी मेरे सहोदर हैं, मेरे प्राण हैं। हर परिस्थिति में, मैं इनकी सेवा के लिए तत्पर तथा संकल्पित हूँ।"

स्वामी जी के इस विचार से उनके सेवा दर्शन को समझ सकते हैं। वे प्राणी मात्र में प्रभु की उपस्थिति मानते थे। सभी को भगवान का स्वरूप मानकर उनकी सेवा करने को तैयार रहते थे। तभी तो अमेरिका, इग्लैंड आदि देशों में भी वे सेवा के लिए गए। वे कहते थे, "हमारा उद्देश्य है, संसार का भला सोचना तथा करना, न कि अपने नाम का ढोल पीटना।" वे यह भी कहते थे, ''कारुण्यवश दूसरों की भलाई करना भी अच्छा है, परंतु शिवत्व ज्ञान से मुक्त होकर जीवमात्र की सेवा उत्तम है। विज्ञापनबाजी से सावधान। यहाँ लोलुपता से बचो। सदैव स्मरण रखो-शांत, मौन और धैर्यपूर्वक सेवा।"

स्वामी जी ने भाषणों और लेखों में ही सेवा भावना का उल्लेख नहीं किया, अपितु अपने इन विचारों को अपने जीवन में भी अपनाया। महामारी फैलने के समय उन्होंने स्वयं बस्तियों में जा-जाकर जनसाधारण की सेवा की। छोटे से छोटे काम से कभी पीछे नहीं हटे। उस समय उन्होंने जन साधारण का आह्वान करते हुए कहा था, ''जाओ, जाओ, सब लोग वहाँ जाओ, जहाँ प्लेग फैला है। जहाँ दुर्भिक्ष के काले बादल छाए हैं। जहाँ लोग कष्टों से पीड़ित हैं, वहाँ जाकर उनका दु:ख हल्का करो। मरना तो सभी को है फिर एक उच्च आदर्श के लिए क्यों न मरो। सेवा करते हुए मर जाना, बीमार पड़े रहकर मर जाने से बेहतर है।''

स्वामी जी युवकों को लक्ष्य करके कहा करते थे, "युवको, तुम्हीं पर देश का भविष्य निर्भर है। तुम्हें अकर्मण्य जीवन बिताते देखकर मुझे मार्मिक पीड़ा होती है। उठो, उठकर काम पर लग जाओ। इधर-उधर मत देखो समय को मत खोओ। यह सोचकर निठल्ले मत बैठो कि अपने आप सब कुछ हो जाएगा। भगवान भी जो करता है, हमारे हाथों से ही करवाता है।"

एक स्थान पर वे लिखते हैं, "जो भगवान शिव की सेवा करना चाहते हैं वे शिव का भाव समझें। शिव का अर्थ ही है कल्याण। पर कल्याण के लिए कार्य करना ही सेवा है। भक्त को पहले जीवों की सेवा करनी चाहिए। जो ईश्वर के सेवकों की सेवा करते हैं, वे भगवान के सच्चे सेवक हैं। हे नवयुवको! गरीबों, पीड़ितों तथा भूखों की सेवा का कर्तव्य मैं तुम्हें सौंपता हूँ।"

वे कहते थे कि जो नारायण को केवल मंदिर की मूर्तियों में ही देखता है, उन पर भगवान प्रसन्न नहीं होते। भगवान उन पर अधिक कृपा बरसाते हैं, जो जाति, संप्रदाय को विचार किए बिना किसी दीन-दरिद्र की सेवा करते हैं। भगवान मानते हैं कि यह सेवक मेरा ही कार्य कर रहा है।

अपने इन विचारों को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1 मई, 1897 को की। आज रामकृष्ण मिशन के अंतर्गत देशभर में अनेक चिकित्सालय चलते हैं, जहाँ नाम मात्र के शुल्क पर लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएँ मिल रही हैं। दिल्ली में रहने वाले लोग करोलबाग स्थित रामकृष्ण मिशन अस्पताल को अच्छी तरह जानते हैं। इस अस्पताल में बहुत ही न्यूनतम शुल्क पर बहुत अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएँ मिलती हैं। ❐

पाथेय

अपि चेदसि पापेभ्य सर्वेभ्यपाप कृत्तम।
सर्वं ज्ञान प्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यति॥

सरलार्थ : यदि तुम्हें समस्त पापियों में भी सर्वाधिक पापी समझा जाए तो भी तुम दिव्य ज्ञान नाव में स्थित होकर दुख सागर को पार करने में समर्थ हो जाओगे।

(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 36)

शाश्वत धर्म

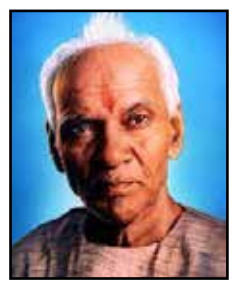

सूर्य कभी अंधकार से लड़ाई नहीं करता। वह केवल अपना प्रकाश फैलाना आरंभ करता है। अंधकार स्वयं ही तिरोहित हो जाता है। आवश्यकता है कि हम भी अपने धर्म-ग्रंथों से वह दृष्टि प्राप्त करें, उनका पाठ करें और उनके विचार से सभी विकार, दुष्ट प्रवृत्तियों तथा अज्ञान के अंध कार को समाप्त करें। केवल मंडली बुलाकर उनके द्वारा पाठ करवाने से या अपने वैभव का प्रदर्शन करने से अच्छा है कि ग्रन्थों को स्वयं पढ़ें, अध्ययन करें और उनका शुभ संदेश ग्रहण करें। शुभ सोचें, शुभ का प्रसार करें, ग्रंथों का प्रचार-प्रसार करें, उनके विचारों को आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाएं और उनके जीवन को धन्य बनाएं।

- आचार्य श्रीराम शर्मा
(गायत्री परिवार, शांतिकुंज हरिद्वार)

जनवरी 2023 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
6.1.2023	शुक्रवार	माघ स्नान, शाकुंभरी जयंती
13.1.2023	शुक्रवार	लोहड़ी पर्व
14.1.2023	शनिवार	मकर संक्रान्ति तथा पं. नेहरू जयंती,
15.1.2023	रविवार	थल सेना दिवस
21.1.2023	शनिवार	मौनी अमावस्या
23.1.2023	सोमवार	नेता जी सुभाष बोस जयंती
26.1.2023	गुरुवार	वसंत पंचमी, गणतंत्र दिवस
28.1.2023	शनिवार	माध्वाचार्य जयंती, भीमाष्टमी
30.1.2023	सोमवार	महात्मा गांधी बलिदान दिवस, नरसी जयंती

प्रांत भजन मण्डली प्रतियोगिता संपन्न

■ डॉ. संगीता त्यागी

तीन वर्ष की लंबी प्रतीक्षा के बाद इस वर्ष 25 दिसम्बर, 2022 के दिन रविवार को प्रान्त भजन मण्डली प्रतियोगिता का अद्‌भुत आयोजन माता झंडेवाली मंदिर परिसर में हुआ। कोरोना महामारी के कारण पिछले तीन वर्ष से सभी कार्य प्रभावित हुए। उसी कारण से बहनों का एकत्रित आकर भजन कीर्तन कर पाना कठिन हो गया था। अब प्रभु की कृपा समस्त विश्व पर हुई और जो क्रम पिछले दशकों से चलता आ रहा था उसको मूर्त रूप दिया गया।

25 दिसम्बर को सौभाग्य से तुलसी पूजन दिवस भी था। ऐसे पवित्र दिन माँ झंडेवाली का प्रांगण और भगवान का भजन बड़ा ही अद्‌भुत मनमोहक कार्यक्रम था।

भजन मंडली प्रतियोगिता का आयोजन तीन स्तरों पर किया जाता है- जिला स्तर, विभाग स्तर एवं प्रांत स्तर।

जिले में प्रथम, द्वितीय रहीं टोलियाँ विभाग में प्रवेश पाती हैं और विभाग में प्रथम, द्वितीय स्थान पर रहीं टोलियाँ प्रांत पर पहुँचती हैं। दिल्ली प्रांत को संघ दृष्टि से आठ विभागों में बांटा गया है। इस प्रकार 16 मण्डलियाँ प्रांत पर पहुँचती हैं।

इस बार प्रांत स्तर पर आई भजन मण्डलियों में एक विशेषता देखने में आई कि पन्द्रह वर्ष से लेकर 60-65 वर्ष तक की बहनों ने भाग लिया था। नये युवा बच्चों की बहुत अच्छी संख्या थी प्रतिभागियों के रूप में। जिस विचार को लेकर ये भजन कीर्तन शुरू किया गया था सेवा भारती द्वारा उसका प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा था। युवा पीढ़ी में संस्कार देने का काम सभी टोलियों में बहुत जोश था, उत्साह था।

सभी टोलियों ने बहुत सुन्दर-सुन्दर एक जैसे परिधान पहने थे। लाल, पीली, हरी, गुलाबी साड़ियाँ और सूट। उनको देखते ही मन प्रसन्नता से भर उठा। सभी बहनें अपने-अपने साज लेकर आई थीं। जब वे पंक्तिबद्ध होकर माता मंदिर द्वारा उपलब्ध कराये गये पंडाल में बैठीं तो सभी को लग रहा था कि किसी उत्सव में आये हैं।

एक निश्चित नियमावली तय की गई थी। सभी को पुनः उसकी जानकारी दी गयी। कुल 45 अंक में से अंक दिए गये थे। निर्णायकों के लिए बहुत कठिन हुआ निर्णय करना क्योंकि सभी ने बहुत सुन्दर भजन प्रस्तुत किये थे। इस वर्ष भजन भगवान श्रीराम पर प्रस्तुत करने थे। बहनों ने बहुत सुन्दर साज बजाये। निर्णायक मण्डल में भी बड़े-बड़े विद्वानों ने मार्गदर्शन किया। कुल चार निर्णायक रहे-

1. श्रीमान अनिल हनसल जी (भैया जी), वे श्री समर्पण सेवा सत्संग सभा नाम की संस्था चलाते हैं। आपने सैकड़ों भजन गाये हैं।

2. दूसरे थे श्रीमान राकेश भारद्वाज जी। वे संगीतकार गायक व लेखक हैं।

3. तीसरे श्रीमान डॉ. रजनीश कुमार गुप्ता जी। सितार वाद्य में दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है। वे डी.पी.एस. रोहिणी में संगीत के अध्यापक हैं।

4. चौथे निर्णायक श्रीमान अश्वनी सूदर जी सेंट जेवियर्स रोहिणी में बीस वर्ष तक संगीत के शिक्षक रहे। पिछले 53 वर्षों से हजारो विद्यार्थियों को संगीत की शिक्षा दे चुके हैं।

हमारे इस कार्यक्रम की अध्यक्षा रहीं श्रीमती दलजीत कौर जी। भाई जोगा सिंह सीनियर सेकेंड्री स्कूल की प्रधानाचार्या जी। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में चार साहिबजारों के विषय में बताया तथा साथ ही सभी से कहा कि विद्यालयों में किताबी ज्ञान दिया जा रहा है सामाजिक ज्ञान व संस्कार घर की पाठशाला से शुरू माँ व पिता द्वारा होना चाहिए।

सेवा भारती के विषय में बहन डॉ. शिवाली जी ने बताया। मंच संचालन बहन अंजू पांडे जी द्वारा बहुत सुंदर तरीके से किया गया। सभी विभागों की बहनों को अलग-अलग जिम्मेदारी दी गई थी। सभी ने बहुत ही जिम्मेदारी से निर्वहन किया। प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

प्रांत सह संगठन मंत्री श्रीमान सुनीलजी भाई साहब पूरा समय कार्यक्रम में रहे।

पिछले 25 वर्ष से भजन मण्डली प्रतियोगिता होती आ रही है। सभी आनन्द लेते हैं प्रतीक्षा करते हैं जिन टोलियों ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त हुए वो इस प्रकार हैं-

1. पूर्वी विभाग, इंद्रप्रस्थ जिले की मण्डली प्रथम स्थान पर रही।

2. झंडेवाला विभाग, कमला नगर जिले की मण्डली द्वितीय स्थान पर रही।

3. रामकृष्ण पुरम विभाग आंबेडकर जिले की टोली तीसरे स्थान पर रही।

विज्ञान और प्रकृति से कोसों दूर है ग्रेगरियन कैलेंडर

■ नरेन्द्र सहगल

31 दिसम्बर की रात को मौज-मस्ती करके नए वर्ष का स्वागत करने वाले लोगों के प्रति हमदर्दी जताते हुए यह निवेदन है कि वे इस अंतरराष्ट्रीय मस्ती में अपने भारत के गौरवशाली अतीत और सांस्कृतिक धरोहर को न भूलें। इस नववर्ष की पृष्ठभूमि को समझना आज के संदर्भ में जरूरी है।

इस समय विश्व में 70 से अधिक कालगणनाएँ प्रचलित हैं, उनसे सम्बन्धित देशों में उनके नववर्ष अपनी-अपनी परम्पराओं के अनुसार आते हैं और अपने-अपने देश के सांस्कृतिक और धार्मिक रीति-रिवाजों और मान्यताओं के अनुसार मनाए जाते हैं। परन्तु इन सभी कालगणनाओं का आधार सारे ब्रह्मांड को व्याप्त करने वाला कालतत्व न होकर व्यक्ति विशेष, घटना विशेष, वर्ग विशेष, सम्प्रदाय विशेष अथवा देश विशेष है।

ईस्वी सन् का प्रारम्भ ईसा की मृत्यु पर आधारित है। परन्तु उनका जन्म और मृत्यु अभी भी अज्ञात है। ईस्वी सन् का मूल रोमन सम्वत् है। यह 753 ईसा पूर्व रोमन साम्राज्य के समय शुरू किया गया था। उस समय उस सम्वत् में 304 दिन और 10 मास होते थे। जनवरी और फरवरी के मास नहीं थे। ईसा पूर्व 56 वर्ष में रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने वर्ष 455 दिन का माना। बाद में इसे 365 दिन का कर दिया गया।

जूलियस सीजर ने अपने नाम पर जुलाई मास भी बना दिया और उसके पोते अगस्तस ने अपने नाम पर अगस्त का मास बना दिया। उसने महीनों के बाद दिन संख्या भी तय कर दी। इस प्रकार ईस्वी सन् में 365 दिन और 12 मास होने लगे। फिर भी इसमें अंतर बढ़ता चला गया, क्योंकि पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करने के लिए 365 दिन 6 घंटे 9 मिनट और 11 सेकेंड लगते हैं। इस तरह ईस्वी सन् 1583 में इसमें 18 दिन का अंतर आ गया।

तब ईसाइयों के पांथिक गुरु पोप ग्रेगरी ने 4

अक्तूबर को 15 अक्तूबर बना दिया और आगे के लिए आदेश दिया कि 4 की संख्या में विभाजित होने वाले वर्ष में फरवरी मास 28 दिन का होगा। लेकिन बाद में इसमें असंतुलन पैदा होने लगा। दरअसल, यह असंतुलन पृथ्वी के कारण पैदा होता है। बता दें कि सूर्य का चक्कर लगाने में पृथ्वी 365 दिन और छह घंटे का समय लेती है। इस कारण हर वर्ष छह घंटे अतिरिक्त बच जाते हैं। इस तरह चार वर्ष में 24 घंटे अतिरिक्त बचने से एक दिन का समय बच जाता है। इस 24 घंटे को समायोजित करने के लिए हर चार वर्ष में फरवरी के महीने में एक दिन जोड़ा जाता है। इस कारण फरवरी महीने में कभी 28 दिन तो कभी 29 दिन होते हैं।

ईसाई सम्वत् के बारे में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पहले इसका आरम्भ 25 मार्च को होता था। परन्तु 18वीं शताब्दी से इसका आरम्भ 1 जनवरी से होने लगा। इस कैलेंडर में जनवरी से जून तक के नाम रोमन देवी-देवताओं के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त का सम्बन्ध जूलियस सीजर और उसके पोते अगस्तस से है। इसी तरह सितम्बर से दिसम्बर तक के मासों के नाम रोमन सम्वत् के मासों की संख्या के आधार पर हैं, जिसका क्रमशः अर्थ है 7, 8, 9 और 10। इससे ही ईस्वी सन् के खोखलेपन की पोल और ईसाई जगत की अवैज्ञानिकता प्रकट हो जाती है।

इसके विपरीत भारत में मासों का नामकरण प्रकृति पर आधारित है। चित्रा नक्षत्र वाली पूर्णिमा के मास का नाम चैत्र है। विशाखा का वैशाख है। ज्येष्ठा का ज्येष्ठ है। श्रवण का श्रावण है। उत्तराभद्रपद का भाद्रपद है। अश्विनी का अश्विन है। कृतिका का कार्तिक है। मृगशिरा का मार्गशीर्ष। पुष्य का पौष। मघा का माघ और उत्तरा फाल्गुनी का फाल्गुन मास होता है।

इसी तरह भारत में 354 दिन के बाद वर्ष और 365 दिन 6 घंटे 9 मिनट 11 सैकेंड के अंतर को दूर करने के लिए हमारे वैज्ञानिकों ने 2 वर्ष 8 मास 16 दिन के उपरांत एक अधिक मास या पुरुषोत्तम अथवा मलमास की व्यवस्था करके कालगणना की प्राकृतिक शुद्धता और वैज्ञानिकता बरकरार रखी है।

उपरोक्त तथ्यों के संदर्भ में यही उचित होगा कि हम सभी भारतवासी पूर्णतः वैज्ञानिकता और प्रकृति के नियमों पर आधारित अपनी युगों की वैज्ञानिक एवं वैश्विक भारतीय कालगणना का प्रयोग करें। इस कालगणना का प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा श्री ब्रह्म जी द्वारा सृष्टि रचना का दिन होने के कारण यह वर्ष प्रतिपदा केवल हम भारतवासियों के ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण सृष्टि के लिए पूजनीय है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ कुछ ऐसी विशेष घटनाएं सम्बंधित हैं जिनके कारण इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। प्रभु श्रीरामचन्द्र का राज्याभिषेक, धर्मराज युधिष्ठिर का राजतिलक, विक्रमादित्य के विक्रम सम्वत् का शुभारम्भ, सम्राट शालिवाहन का शक सम्वत्, स्वामी दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थापना और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन।

अतः इधर-उधर से जोड़तोड़, मनगढ़ंत कल्पनाओं, मिथ्या सिद्धान्तों और कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा-भनुमति ने कुनबा जोड़ा के नमूने पर बने ईस्वी सन के नववर्ष को ईसाई जगत तो मनाए यह समझ में आता है परन्तु हम भारतीय इसके पीछे अपनी परम्पराओं की सुधबुध खोकर लट्टू हो जाएं यह बात समझ में नहीं आती।

यूरोपीय ईसाई सम्राज्य के प्रभावकाल में यह ईसाई कालगणना हम पर थोपी गई थी। उस समय की मानसिक दासता के कारण हम ईसाई वर्ष को मनाते चले आ रहे हैं। यह हमारे लिए लज्जा का विषय नहीं है क्या? आइये हम इसका परित्याग कर अपना भारतीय नववर्ष हर्षोल्लास से मनायें। यह भी ध्यान रखें कि इस ईसाई नववर्ष के आगमन का स्वागत नाच-गाने, उच्श्रृंखलता, रात-रात भर होटलों में शराब के नशे में मौज-मस्ती करना इत्यादि के साथ होता है। परन्तु भारतीय नववर्ष का स्वागत नवरात्र पूजन, देवी पूजन और व्रत इत्यादि के साथ प्रारम्भ होता है। ❐

सखि ! वसंत आया

■ पंकज साहा

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने वसंत को मानव-मन की एक अवस्था कहा है, परंतु मानव-मन में वसंत ऋतुराज के रूप में ही बसा हुआ है। हमारे देश में माघ श्रीपंचमी, जिसे वसंत पंचमी भी कहा जाता है, से आरंभ कर चैत्र और वैशाख तक वसंत काल माना जाता है। इस काल को मधुमास भी कहा जाता है।

शिशिर (जाड़ा) बड़े-से-बड़े बलवान को भी सिहरा देता है। शायद इसीलिए सब हाड़ कँपाती ठंड से शीघ्र मुक्ति चाहते हैं। महाकवि शेली ने ऐसी ही ठंड को लक्ष्य कर आशाजनक संदेश दिया है कि "जाड़ा है, तो वसंत दूर नहीं।" अर्थात् प्रकृति ने यदि हमें जाड़े का कष्ट दिया है, तो वसंत की खुशियाँ भी दी है। राष्ट्रकवि दिनकरजी ने शिशिर को शीर्णा बताते हुए लिखा है, "मैं शिशिर शीर्णा चली, अब जाग तू मधुमास आली।"

जब जाड़े की ठंड शीतलता में परिणत होने लगे, जब मंद-मंद पवन आम्र-मंजरियों की मादक खुशबू का वहन करने लगे, सारी सृष्टि पुलकित हो झूम उठे, वातावरण में नए उल्लास और उत्साह की गूंज सुनाई पड़े, निरालाजी के शब्दों में सर्वत्र 'नव गति, नव लय, ताल छंद नव' लगने लगे, तो समझ लीजिए कि वसंत आ गया है।

ऋतुराज वसंत के आते ही हमारे देश के कविगण उसकी अगवानी हेतु अपनी लेखनी सँवारकर बैठ जाते हैं। संस्कृत के महाकवि कालिदास से लेकर हिंदी के भक्तिकालीन, रीतिकालीन एवं आधुनिक कवियों ने एक परंपरा के रूप में ऋतुराज वसंत पर अपने उद्‌गारों को व्यक्त किया है। लेकिन बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में, विशेषकर सन् साठ के बाद जैसे-जैसे मानव में बौद्धिकता और समाज में भौतिकता हावी होने लगी, मनुष्य मानव से मशीन बनता गया, वैसे-वैसे हमारे साहित्य में प्राकृतिक चेतना, मानवीय संवेदना में कमी और बौद्धिक विमर्श की बाढ़ आने लगी। महाप्राण निराला की 'सखि! वसंत आया', नागार्जुन की 'वसंत की अगवानी', कुँवर नारायण की 'वसंत आ गया' जैसी कविताओं के भावों से हिंदी के कवियों की घनिष्ठता कम होने लगी। बौद्धिकता के भँवरजाल, अर्थ के मायाजाल और जीवन के जंजाल में फँसे कवियों को बाह्य प्रकृति की ओर नजर डालने की मानो फुरसत ही नहीं मिली। परंतु कुछ कवि ऐसे भी हुए और आज भी हैं, जिन्होंने अपने मशीनी जीवन के बीच कोयल की कूक भी सुनी और अपने कलेजे में हूक को भी महसूस किया है। आज अनेक कवि ऐसे हैं, जिनके चेहरे वसंत के आते ही गुलाबी और फागुन

माह में महताबी हो जाते हैं। वसंत के आते ही सुनीता मिश्रा 'सुनीति' हर्ष से नाच उठती हैं-

मन नाच-नाच हर्षाया
तब समझो वसंत है आया।
मंद-मंद सी पवन चले जब
उड़ें परिंदे गगन तले जब
कूँज-कूँज में कोयल कूके
निकल पड़े जोड़े जुगनू के
हर तन-मन जब हो हर्षाया
तब समझो वसंत है आया।

वसंत के आते ही सरसों फूल उठती है, शीतल बयार विरही जनों को चुभने लगती है और टेसू के लाल-लाल फूल अँगारों के समान लगने लगते हैं। अपने एक गीत में डॉ. शंकरमोहन झा ऐसे ही भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं-

धुन वासंती साथी न टेरो
चुभने लगी एक-एक बयार
लो खेतों में सरसों अँगड़ाई
कोयलिया काली तुतलाई
टेसू के फूल खिल रहे
उपवन के होंठ न हेरो।

प्रोफेसर ताराचरण खवाड़े वसंत में प्रकृति का सौंदर्य देख मुग्ध होकर गा उठते हैं-

आम्र कुंज भ्रमर पुंज हर निकुंज बौराए।
हर पलाश में हुलास नव विकास अकुलाए।

कुछ ऐसे ही भाव डॉक्टर राजेंद्र पंजियार की इन पंक्तियों में अभिव्यक्त हुए हैं-

कितने मनभावन लगते
फगुआने के दिन।
आम्र मंजरी से सुरभित
हो रही दिशाएँ
बौराई बहकी बहकी
अलमस्त हवाएँ
कोकिल के स्वर से नभ को
सरसाने के दिन।

प्रेमालु कवियों एवं गीतकारों के लिए वसंत ऋतु विशेष न होकर त्योहार बन जाता है, परंतु बहुत सारे कविधगीतकार ऐसे भी हैं, जो वसंत में भी अपने परिवेश के यथार्थ को भूल नहीं पाते। अपनी वासंतिक रचनाओं में वे वसंत के सौंदर्य के प्रति पारंपरिक प्रतिबद्धता के बदले व्यक्ति और समाज की विकलता को उद्घाटित करने के प्रति प्रतिबद्ध प्रतीत होते हैं। डॉक्टर शांति सुमन को वसंत का बाह्य सौंदर्य नहीं लुभाता, क्योंकि वे अपने जीवन के आंतरिक पतझर से विचलित हैं-

अरी जिंदगी पानी में तू
बना रही घर हैं
बाहर-बाहर है वसंत
पर भीतर पतझर हैं।

आजादी मिलने के बाद जहाँ देश में भूखों-नंगों की संख्या बढ़ी है, वहाँ मूर्खों, आतंकवादियों का दबदबा भी बढ़ा है। रामकुमार कुंभज इससे विचलित होकर व्यंग्यात्मक लहजे में पूछते हैं-

मूर्खों का कैसा हो वसंत?
चारों तरफ से निकलती हो गोलियाँ
और मचता हो आतंक।

वसंत के आते ही फागुन की याद आती है और फागुन की याद आते ही फाग की। सुप्रसिद्ध कवि डॉण शिव ओम अंबर अपने एक दोहे में फाग चित्रण करते

हुए लिखते हैं-

चढ़ा गाँव दर गाँव, ये सैलावी फाग।
राग-राग है रात हर, प्रात पराग-पराग।।

होली बसंत का सबसे बड़ा उत्सव है। हमारा हिंदी-साहित्य, विशेषकर भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन साहित्य होली के रंगों से सराबोर है।

यहाँ देवर-भाभी, जीजा-साली, सैंया लुगाई की चुहलबाजी, मित्रों की हँसी- टिटोली के बहुरंगो चित्र देखने को मिलते हैं। पद्माकर की गोरी कान्हा को अपने घर बुलाकर जमकर होली खेलती है और इस प्रकार विदा करती है-

नैन नचाय, कही मुसकाय,
लाला फिर आइयो खेलन होली।

ऐसी दृश्य-पंक्तियों को पढ़कर सुनकर बूढ़ों में भी जवानी आ जाती है। आधुनिक हिंदी साहित्य के जन्मदाता भारतेंदु हरिश्चंद्र की निम्नलिखित पंक्तियाँ रूखे-सूखे-पिचके गालों को भी गुलाबी करने में सक्षम हैं-

गले मुझको लगा लो,
ऐ मेरे दिलदार होली में।
बुझे दिल की लगी,
मेरी भी तो ऐ यार होली में।
गुलाबी गाल पर कुछ रंग
मुझको भी जमाने दो
मनाने दो मुझे भी
जानेमन त्यौहार होली में।

परंतु सच तो यह है कि वह होली तो अब हो ली। आज राजनीति, महँगाई, स्वार्थनीति, भ्रष्टाचार, हुल्लड़बाजी, संवेदनहीनता आदि ने मिलकर होली को बुरी तरह घायल कर दिया है। होली की मोटी 'गारी' आज खट्टी लगने लगी है। टूटे दिलों को जोड़ने की पहले वाली शक्ति आज की होली में न रही। परंतु फिर भी, होली आज भी मनाई जाती है, कविगण उसपर आज भी कविताएँ लिख रहे हैं। कवि मदन मोहन कामना करते हैं-

अबकी होली में हो जाए, कुछ ऐसा चमत्कार,
हो जाए भ्रष्टाचार स्वाहा, महँगाई, झगड़े, लूटमार।
सब लाज- शर्म को छोड़, हम प्रेम से करें छेड़छाड़,
गोरी के गोरे गालों पर अपने हाथों से मल गुलाल।
आज पूरा विश्व बारूद के ढेर पर बैठा हुआ है।

हमारे देश में स्वतंत्रता के नाम पर उग्रता, अराजकता, उच्छृंखलता तो है ही, आतंकियों ने भी नाक में दम कर रखा है। आचार्य संजीव सलिल होली में, जब दुश्मन को भी दोस्त बना लिया जाता है, आतंकवादियों के प्रति घृणा व्यक्त करते हुए उन्हें सबक सिखाने की बात करते हैं-

करो आतंकियों पर वार, अबकी बार होली में,
न उनको मिल सके घर-द्वार, अबकी बार होली में।
बना तोपों की पिचकारी चलाओ यार अब जी भर,
बहुत की शांति की बातें, लगाओ अब उन्हें लातें।

परंतु गुलशन मदान जैसे कुछ कवि होली की पुरानी परंपरा का वर्णन करते हुए दुश्मन को भी गले लगाने की बात करते हैं-

रंगों का त्योहार है होली
खुशियों की बौछार है होली
लाल गुलाबी पीले देखो
रंग सभी रंगीले देखो
पिचकारी भर-भर ले आते
इक दूजे पर सभी चलाते
होली पर अब ऐसा हाल
हर चेहरे पर आज गुलाल
आओ यारो इसी बहाने
दुश्मन को भी चलो मनाने।

होली को प्रीति का त्योहार कहा जाता है। इन दिनों हमारे समाज में राग में कमी और द्वेप में वृद्धि हुई है। परंतु वसंत ऋतु जहाँ हमें अपनी मादक सुरभि से प्रफुल्लित कर देता है, वहीं होली आज भी हमें अपनी रंगीनी से भर देती है। जीवन और समाज के खट्टे-मीठे अनुभवों, अनुभूतियों के संग वसंत आज भी हिंदी काव्य में उपस्थित है।

(साभार : साहित्य अमृत)

अहिल्याबाई का न्याय

■ हेमन्त शर्मा

एक बार मध्य प्रदेश के इन्दौर नगर में एक रास्ते से महारानी देवी अहिल्याबाई होल्कर के पुत्र मालोजीराव का रथ निकला तो उनके रास्ते में एक नवजात बछड़ा आ गया। गाय अपने बछड़े को बचाने दौड़ी तब तक मालोराव जी का रथ गाय के बछड़े को कुचलता हुआ आगे बढ़ गया। किसी ने उस बछड़े की परवाह नहीं की। गाय बछड़े के निधन से स्तब्ध व आहत होकर बछड़े के पास ही सड़क पर बैठ गई। थोड़ी देर बाद अहिल्याबाई वहाँ से गुजरीं। अहिल्याबाई ने गाय को और उसके पास पड़े मृत बछड़े को देखकर घटनाक्रम के बारे में पता किया। सारा घटनाक्रम जानने पर अहिल्याबाई ने दरबार में मालोजी की पत्नी मेनावाई से पूछा, यदि कोई व्यक्ति किसी माँ के सामने ही उसके बेटे की हत्या कर दे, तो उसे क्या दंड मिलना चाहिए? मालोजी की पत्नी ने जवाब दिया- उसे माँ प्राण दंड मिलना चाहिए।

देवी अहिल्याबाई ने मालोराव को हाथ-पैर बाँध कर मार्ग पर डालने के लिए कहा और फिर उन्होंने आदेश दिया मालोजी को मृत्यु दंड रथ से टकराकर दिया जाए। यह कार्य कोई भी सारथी करने को तैयार न था। देवी अहिल्याबाई न्यायप्रिय थी। अतः वे स्वयं ही माँ होते हुए भी इस कार्य को करने के लिए भी रथ पर सवार हो गई। वे रथ को लेकर आगे बढ़ी ही थीं कि तभी एक अप्रत्याशित घटना घटी। वही गाय फिर रथ के सामने आकर खड़ी हो गई, उसे जितनी बार हटाया जाता उतनी बार पुनः अहिल्याबाई के रथ के सामने आकर खड़ी हो जाती।

यह दृश्य देखकर मंत्री परिषद् ने देवी अहिल्याबाई से मालोजी को क्षमा करने की प्रार्थना की, जिसका आधार उस गाय का व्यवहार बना। इस तरह गाय ने स्वयं पीड़ित होते हुए भी मालोजी को द्रौपदी की तरह क्षमा करके उनके जीवन की रक्षा की।

इन्दौर में जिस जगह यह घटना घटी थी, वह स्थान आज भी गाय के आड़ा होने के कारण 'आड़ा बाजार' के नाम से जाना जाता है। उसी स्थान पर गाय ने अड़कर दूसरे की रक्षा की थी। अक्रोध से क्रोध को, प्रेम से घृणा का और क्षमा से प्रतिशोध की भावना का शमन होता है। भारतीय ऋषियों ने यूँ ही गाय को माँ नहीं कहा है, बल्कि इसके पीछे गाय का ममत्वपूर्ण व्यवहार, मानव जीवन में, कृषि में गाय की उपयोगिता बड़ा आधारभूत कारण है। ❐

देवी अहिल्याबाई ने मालोराव को हाथ-पैर बाँध कर मार्ग पर डालने के लिए कहा और फिर उन्होंने आदेश दिया मालोजी को मृत्यु दंड रथ से टकराकर दिया जाए। यह कार्य कोई भी सारथी करने को तैयार न था। देवी अहिल्याबाई न्यायप्रिय थी। अतः वे स्वयं ही माँ होते हुए भी इस कार्य को करने के लिए भी रथ पर सवार हो गई।

पतिव्रता स्त्री की शक्ति

■ प्रतिनिधि

पद्मपुराण में पतिव्रता शैव्या की कथा का विस्तार में वर्णन मिलता है। हिंदू पौराणिक ग्रंथ की इस कथा के अनुसार बहुत समय पहले प्रतिष्ठानपुर नामक नगर में कौशिक नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह कोढ़ से पीढ़ित था। उसके रिश्तेदार उसे छोड़कर चले गए लेकिन उसकी पत्नी शैव्या उसे देवता के समान ही पूजती थी। कौशिक बड़ा ही क्रोधी स्वभाव का था। वह शैव्या का अपमान करता लेकिन वह सुनती रहती। एक दिन कौशिक ने शैव्या से कहा, 'कुछ दिन पहले मैंने यहां एक सुंदर वेश्या को जाते देखा था। क्या तुम मुझे उसके पास ले चलोगी।' यह सुनकर शैव्या को क्रोध नहीं आया, बल्कि वह पहले उस वेश्या के घर गई। और अपने पति की इच्छा उसे बताई। वेश्या ने शैव्या से कहा कि आधी रात को अपने पति को मेरे घर ले आना। यह सुनकर शैव्या अपने घर लौट आई।

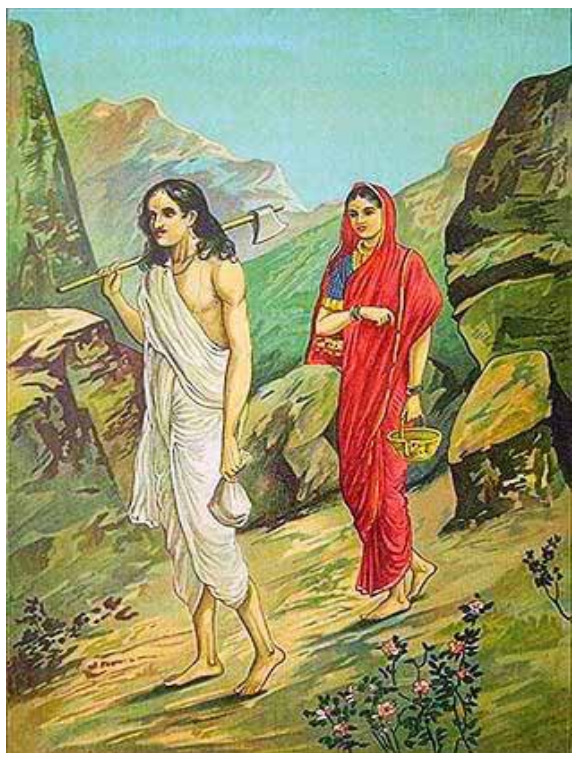

रात के समय अपने पति को कंधे पर उठाकर शैव्या वेश्या के घर चल पड़ी। उसने रास्ते में देखा। मार्ग में एक सूली थी जिस पर चोरी के संदेह में माण्डव ऋषि को उस पर चढ़ा दिया था। हालांकि ऋषि अपनी मंत्र शक्ति से बच सकते थे लेकिन वह बचपन में चीटियों को कांटे चुभोया करते थे। वह जानते थे यह सजा उसी के फलस्वरूप मिली है। वहां काफी अंधेरा था, जिसके चलते शैव्या के पति का पैर सूली से लग गया, जिससे सूली हिलने लगी और ऋषि का दर्द बढ़ गया। ऋषि ने शाप दिया, जिसने भी इस सूली को हिलाया है। सूर्य उदय होने से पहले उसकी मृत्यु हो जाए। तब शैव्या बोली, 'हे ऋषि मेरे पति का पैर अनजाने में आपकी सूली से लग गया है। कृपया शाप वापस ले लें।' ऋषि ने मना कर दिया। तब शैव्या बोली, 'ऋषिवर आप शाप वापस ले लें, अन्यथा कल सूर्य उदय नहीं होगा।' इतना कहकर वह अपने पति को वेश्या के घर की ओर ले जाने लगी।

पतिव्रता शैव्या के वचन के चलते सूर्य उदय नहीं हुआ। ऐसा कई दिनों तक चलता रहा। चारों ओर हाहाकार मच गया था। यह देख सभी देवतागण, ब्रह्माजी के पास पहुंचे। तब ब्रह्माजी ने कहा, शैव्या ही इस समस्या का निराकरण कर सकती हैं।

ब्रह्माजी पतिव्रता नारी शैव्या के पास पहुंचे। शैव्या ने ब्रह्माजी को बताया कि ऋषि अगर सूर्य उदय हुआ तो उसके पति की मृत्यु हो जाएगी। तब ब्रह्माजी बोले, तुम अपने वचन वापस ले लो, मैं तुम्हारे पति को स्वस्थ करके पुनः जीवित कर दूंगा। शैव्या ने ऐसा ही किया और अपने पति के प्राण भी बचा लिये। कौशिक जब स्वस्थ हुआ तो उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। इस तरह पति-पत्नी सुखपूर्वक रहने लगे। तो ऐसी थीं पतिव्रता भारतीय नारी शैव्या। ❐

यौनकर्मियों के लिए 'उत्कर्ष' के नाम से क्लिनिक का शुभारंभ

दिल्ली के जीबी रोड पर कार्यरत यौनकर्मियों हेतु पहली बार 'उत्कर्ष' नाम से एक क्लिनिक शुरू हुआ है। 1 जनवरी, 2023 को शुरू हुए इस क्लिनिक में यौनकर्मियों और उनके परिवार के लोगों के स्वास्थ्य का परीक्षण होगा और उन्हें दवाई भी दी जाएगी।

सेवा भारती, दिल्ली के महामंत्री सुशील गुप्ता के अनुसार उत्कर्ष का उद्देश्य है यौनकर्मियों की नियमित जांच और उपचार के साथ ही बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना। बता दें कि जी.बी. रोड दिल्ली का 'रेड लाइट एरिया' है। एक रिपोर्ट के अनुसार यहां लगभग 3000 यौनकर्मी और उनके बच्चे रहते हैं। आम तौर पर ये लोग बीमार होने के बाद भी किसी अस्पताल में जाने से बचते हैं। इस कारण इनका जीवन बहुत ही कठिन स्थिति से गुजरता है। इसे देखते हुए सेवा भारती, दिल्ली और नेशनल मेडिकोज ऑर्गनाइजेशन (NMO) ने साथ मिलकर इस क्लिनिक का शुभारंभ किया है।

उल्लेखनीय है कि 'उत्कर्ष' सेवा भारती और NMO की एक पहल है, जो कुछ समय पहले जरूरतमंद लोगों के लिए एक चिकित्सा शिविर के रूप में शुरू हुई थी और अब यह एक नियमित क्लिनिक के रूप में विकसित हो गया है।

इससे पहले सेवा भारती ने यौनकर्मियों की बच्चियों के लिए 'अपराजिता' के नाम से एक प्रकल्प शुरू किया है। दिल्ली के आनंद निकेतन में चल रहे इस प्रकल्प में यौनकर्मियों की बच्चियों को रखा जाता है। वहां उन्हें पढ़ाने से लेकर अन्य सुविधाएं नि:शुल्क मिलती हैं। इस समय इस प्रकल्प में छह बच्चियां रह रही हैं। सेवा भारती का उद्देश्य है ये बच्चियां पढ़-लिखकर सामान्य जीवन जिएं।

सभी परिवार के सदस्य कृपया ध्यान दें

1. कोई भी खाली पेट न रहे।
2. उपवास न करें।
3. रोज एक घंटे धूप लें।
4. एसी का प्रयोग न करें।
5. गरम पानी पिएं, गले को गीला रखें।
6. सरसों का तेल नाक में लगाएं।
7. घर में कपूर और गूगल जलाएं।
8. आप सुरक्षित रहें, घर पर रहें।
9. आधा चम्मच सोंठ हर सब्जी में पकते हुए अवश्य डालें।
10. रात को दही ना खायें।
11. बच्चों को और खुद भी रात को एक एक कप हल्दी डाल कर दूध पिएं।
12. हो सके तो एक चम्मच च्यवनप्राश खाएं।
13. घर में कपूर और लौंग डाल कर धूनी दें।
14. सुबह की चाय में एक लौंग डाल कर पिएं।
15. फल में सिर्फ संतरा ज्यादा से ज्यादा खाएं।
16. आंवला किसी भी रूप में चाहे अचार, मुरब्बा, चूर्ण इत्यादि खाएं।
17. यदि आप कोरोना को हराना चाहते हैं तो कृपा करके ये सब अपनाइए।

- डॉक्टर विनोद, एम्स

विविधता में एकता का प्रतीक है मकर संक्रान्ति पर्व

■ आचार्य मायाराम 'पतंग'

मकर संक्रांति सारे भारत में मनाया जाने वाला एक महान पर्व है। अलग-अलग प्रांतों में इसे मनाने की परंपरा भी अलग है, परंतु सबके पीछे मान्यता तो एक ही है। विविधता में एकता और अखंडता का सुन्दर उदाहरण है यह

मकर संक्रान्ति। उत्तर प्रदेश में मकर संक्रान्ति बहुत श्रद्धापूर्वक सभी जिलों में मनाई जाती है। पंजाब और हरियाणा में इसे एक दिन पूर्व लोहड़ी नाम से रात को मनाते हैं। उत्तराखंड में इसे खिचड़ी संक्रान्ति कहा जाता है। गुजरात, महाराष्ट्र में इस पर्व को उत्तरायण पर्व कहते हैं। दक्षिण के प्रांतों में संक्रान्ति को पोंगल नाम दिया गया है। पोंगल का अर्थ है खीर। इस दिन समुदाय में मिल कर खुशी मनाई जाती है। अपनी फसल से प्राप्त चावलों को गन्ने के रस में पकाकर खीर बनाई जाती है तथा मिल बांट कर खाई जाती है। वहां यह

त्योहार चार दिन तक मनाया जाता है। बंगाल तथा असम में इस त्योहार को माघ बिहू कहा जाता है। कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश में कंवल संक्राति नाम दिया जाता है। वास्तव में यह पर्व इस का प्रमाण है कि भारत में अति प्राचीन काल से ही

अन्तरिक्ष में ग्रहों की गति का ज्ञान प्राप्त था। सूर्य के गिर्द धरती घूम रही है। सब ग्रह अपनी गति से चक्कर लगा रहे हैं। तारों के बारह समूह हैं जिन्हें राशि कहा जाता है। सूर्य और पृथ्वी के मध्य क्रमश ये राशियां एक निश्चित अवधि तक रहती हैं। इसी अवधि को मास या महीना कहते हैं। ये राशियां हैं- मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ तथा मीन।

कर्क राशि में सूर्य प्रवेश करता है तो दक्षिण ाायन मार्ग होता है। मकर राशि में सूर्य प्रवेश करता है तो उत्तरायण पक्ष होता है। इसी अवसर को मकर संक्रान्ति का पर्व कहते हैं। सूर्य का प्रकाश बढ़ने लगता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इसी मकर संक्रान्ति से देवों का दिन शुरू होता है और कर्क राशि में सूर्य के प्रवेश से देवों की रात होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अध्याय आठ में अर्जुन को यह बात समझाई है। यह भी बताया है कि जिनकी मृत्यु उत्तरायण अर्थात् देवों के दिन के समय होती है वे परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं और जो दक्षिण पर अर्थात देवों की रात्रि में शरीर छोड़ते हैं, वो धरती पर फिर किसी योनि में जन्म लेते हैं। इसीलिए प्रयागराज में कुम्भ का मेला मकर संक्रांति को ही प्रारंभ होता है।

मकर संक्रांति पर गंगा स्नान और दान पुण्य का बड़ा महत्व है। सभी हिन्दू इस पर्व पर यथा शक्तिदान देते हैं। गंगा जी नहीं जा पाते तो किसी भी तीर्थ पर दान पुण्य करते हैं। जो बहुत बड़ा दान नहीं कर सकते वे तिल, गुड़, गज्जक रेवड़ी, लड्डू आदि बांटते हैं।

तमिलनाडु में जल्लीकट्टू नामक विशाल खेल होता है। एक बैल के सींगों में इनाम की राशि बांध दी जाती है। मैदान में युवा और फैल जाते हैं। जो युवा बैल को काबू में कर लेता है, वही पुरस्कार विजेता बनता है। मकरसंक्रांति का यह पर्व

भारतीय संस्कृति के ज्ञान विज्ञान और अखण्डता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। पश्चिमी चमक-दमक में हमें इसके महत्व को नहीं भूलना चाहिए। ❐

वीर गुरुपुत्रों के बलिदान और मुगलिया दहशतगर्दी

■ नरेंद्र सहगल

क्रूर मुगल शासक औरंगजेब की मजहबी दरिंदगी और दहशतगर्दी को खुली चेतावनी देने वाले श्रीगुरु पुत्रों के महान बलिदान का संबंध किसी एक क्षेत्र, प्रांत, कौम और साम्प्रदाय के साथ नहीं है। यह बलिदान भारत राष्ट्र की वीरव्रती सनातन धरोहर की एक सशस्त्र कड़ी है। उल्लेखनीय है कि दशमेश पिता श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज द्वारा सृजित 'खालसा पंथ' ने औरंगजेब की आततायी मानसिकता और उसकी गैरइंसानी हरकतों को सदैव के लिए दफन कर दिया था।

त्याग और शौर्य की अनूठी मिसाल श्रीगुरु पुत्रों के बलिदान की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने "न भूतो न भविष्यति" कह कर अपनी श्रद्धांजलि दी है। वास्तव में चारों साहिबजादों के बलिदान वीर अभिमन्यु, प्रह्लाद, ध्रुव, नचिकेता एवं भरत जैसे वीर भारतीय पुत्रों की विरासत को जीवित रखने का महान उपकर्म है।

श्रीगुरु पुत्रों ने अपने बलिदानों से सारे भारत राष्ट्र के स्वाभिमान को पुनः जीवित कर दिया। अतः इस 'वीर बाल दिवस' पर सभी भारतवासियों को जाति, बिरादरी, कौम, प्रांत, और भाषा की संकीर्णता को छोड़कर एक राष्ट्रपुरुष होने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए और उन लोगों के नापाक इरादों को चुनौती देनी चाहिए जो भारत रक्षक खालसा पंथ और इसके बलिदानों पर अलगाववाद का रंग चढ़ाते हैं।

अपनी आत्मकथा बचित्र नाटक में श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा है- "सकल जगत में खालसा पंथ गाजे, जागे धर्म हिन्दू तुर्क द्वंद भाजै।" अपने इस ध्येय वाक्य को इस महान संत योद्धा ने अपने समस्त परिवार की आहुति देकर साकार कर दिया। आज देश और विदेश में 'वीर बाल दिवस' मनाकर समस्त धर्म एवं मानवता प्रेमी गुरुपुत्रों के महान बलिदान को श्रद्धापूर्वक नमन कर रहे हैं।

अनादि कल से आज तक विश्व के इतिहास में एक भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जब किसी योद्धा ने युद्ध के मैदान में अपना समस्त परिवार ही कुर्बान कर दिया हो। हमारे धर्मरक्षक खालसा पंथ की सृजना करने वाले दशमेश पिता श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने भारतीय संस्कृति, धर्म और स्वतंत्रता के लिए अपने पिता, चारों पुत्रों और अपनी माता को भी राष्ट्र की बलिवेदी पर बलिदान देने की न केवल प्रेरणा दी अपितु अपने प्राणों का उत्सर्ग करते हुए देखा भी।

खालसा पंथ की सृजना के समय श्रीगुरु गोबिन्द सिंह ने अपने पांचों सिंघ शिष्यों से प्रतिज्ञा की थी- "आपने मुझे अपना सर दिया है मैं आपको अपना सरवंश दूंगा" जब एक गुरु सिंघ भाई दयासिंह ने कहा- "सच्चे पातशाह हमने तो अपने शीश देकर अमृतपान किया है। आप खालसा को क्या भेंट करोगे?" तुरंत दशमेश पिता ने उत्तर दिया- "मैं अपने सभी सुत खालसा (धर्मरक्षकों) की भेंट चढ़ाऊँगा। मैं स्वयं भी अपने सिंघों के बीच उपस्थित रहूँगा।'' इतिहास साक्षी है कि दशमेश पिता ने अपनी घोषणा अथवा प्रतिज्ञा को अक्षरशः निभाया।

यहाँ हम दशमेश पिता के चारों पुत्रों के महान बलिदान का संक्षिप्त वर्णन ही करेंगे। साहिबजादा अजीत सिंह (18 वर्ष), साहिबजादा जुझार सिंह (16 वर्ष), जोरावर सिंह (8 वर्ष) और साहिबजादा फतेह सिंह (6 वर्ष) इन चारों पुत्रों को श्रीगुरु ने अपनी देखरेख

में शस्त्र विद्या एवं आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान की। देश और धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने के संस्कारों से ओतप्रोत थे चारों वीर पुत्र।

दशमेश पिता ने अपने मात्र 42 वर्ष के जीवन काल में मुगलों की दहशतगर्दी के विरुद्ध अनेक युद्ध लड़े। परंतु 'चमकौर की गढ़ी' नामक स्थान पर लड़ा गया भयंकर युद्ध अपना विशेष महत्व रखता है। इस युद्ध में मात्र 40 सिख योद्धाओं ने हजारों मुगल सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए थे। श्रीगुरु और उनके सिख सैनिकों ने किले के अंदर से तीरों की बौछार करके सैकड़ों मुगल सैनिकों को यमलोक पहुंचा दिया। अंत में श्रीगुरु ने अपने बड़े पुत्र बाबा अजीत सिंह को मात्र पांच सिख सैनिकों के साथ किले के बाहर जाकर युद्ध करने का आदेश दिया।

इस मात्र 18 वर्षीय तरुण योद्धा ने शत्रुओं के घेरे को तोड़ा और शत्रुओं के बीच में जाकर अपनी तलवार के भीषण वारों से सैंकड़ों मुगलों को काट डाला। महाभारत के युद्ध में 18 वर्षीय अभिमन्यु ने भी इसी तरह हजारों कौरव सैनिकों की घेराबंदी को तोड़कर चक्रव्यूह को भेद डाला था। इसी वीरव्रती इतिहास को बाबा अजीत सिंह ने चमकौर के युद्ध में दोहरा दिया था।

बाबा अजीत सिंह के बलिदान के बाद श्रीगुरु ने अपने दूसरे पुत्र 16 वर्षीय बाबा जुझार सिंह को युद्ध के मैदान में जाने का आदेश दिया। इस तरुण योद्धा ने भी अपनी तलवार के जौहर दिखाए और शत्रु सेना के बहुत बड़े हिस्से को यमलोक का रास्ता दिखा दिया। इस तरह दोनों वीर पुत्र वीरगति को प्राप्त हुए। धन्य है ऐसा महान पिता जिसने अपने कलेजे के दोनों दुकड़ों को धर्म हेतु बलिदान कर दिया।

इस युद्ध के पश्चात् श्रीगुरु का सारा परिवार बिखर गया। इनके दोनों छोटे बेटों को इनकी दादी गुरुमाता गुजरी जी सुरक्षित लेकर एक गाँव में पहुंची। इस समय दोनों बेटों जोरावर सिंह और फतेह सिंह 8 वर्ष और 6 वर्ष के थे। इस गाँव में गुरु परिवार का एक भक्त गंगू रहता था। इस गुरुभक्त ने पहले तो गुरु माता के सोने के जेवर और सिक्के चुराए और फिर शहर के कोतवाल को गुरुपुत्रों और माता की जानकारी दे दी। सरहिन्द के नवाब वजीर खान ने इन तीनों को गिरफ्तार करके एक अति ठंडे बुर्ज में कैद कर दिया। इस परिस्तिथि की गंभीरता को भांप कर गुरुमाता दादी ने दोनों बच्चों को अपने धर्म पर अड़िग रहने की शिक्षा दी।

अगले दिन प्रातः नवाब वजीर खान ने दोनों बच्चों को दरबार में आने का आदेश दिया। दरबार का दरवाजा इतना छोटा था कि आने वालों को झुक कर अंदर जाना पड़ता था। इन दोनों वीरपुत्रों ने झुकने के बजाए पहले अपने पांव दरवाजे के अंदर किए और फिर भीतर गए। नवाब को सलाम तक नहीं किया। "बोले सो निहाल-सतश्री अकाल" से दरबार की दीवारों को हिला दिया।

इन्हें जब इस्लाम कबूल करने के लिए कहा गया तो दोनों ने गरजते हुए कहा- "हम दशमेश पिता कलगीधर गुरु गोबिन्द सिंह के पुत्र हैं और धर्म और मानवता के लिए शहीद होने वाले श्रीगुरु तेग बहादुर के पौत्र हैं। हम अपने प्राण दे देंगे, परंतु धर्म नहीं छोड़ेंगे।''

इन दोनों वीर पुत्रों को जिंदा ही दीवारों में चिन देने का आदेश दिया गया। दोनों वीर पुत्रों ने ऊंची आवाज में उद्घोष किया- "वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह" जैसे-जैसे दीवार ऊंची होती चली गई, दोनों बालक उद्घोष करते रहे। स्वधर्म, मानवता और स्वतंत्रता के लिए शहीद हुए गुरुपुत्रों ने बलिदान का अनूठा इतिहास रच डाला।

उधर जब इन दोनों वीरपुत्रों के इस तरह बेदर्दी से शहीद कर दिए जाने का समाचार दादी माता गुजरी ने सुना तो उन्होंने भी प्राण त्याग दिए। हिन्दू राजा टोडरमल ने लाखों स्वर्ण मुद्राएं देकर कुछ भूमि खरीदी और दोनों वीर पुत्रों के अंतिम संस्कार की व्यवस्था की। इस स्थान पर ही गुरुद्वारा ज्योतिस्वरूप मौजूद हैं। गुरु पुत्रों के शहीदी स्थान पर गुरुद्वारा फतेह सिंह है। इस तरह एक पूरा परिवार स्वधर्म और स्वतंत्रता के लिए शहीद हो गया। ❐

वार्षिक राशिफल : 2023

■ आचार्य भजनानंद

मेष : वर्ष 2023 में शनि मकर राशि की अपनी यात्रा को पूर्ण करते हुए कुंभ राशि में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मेष राशि में शनिदेव आपकी कुंडली में दसवें और ग्यारहवें भाव के स्वामी होकर 11वें भाव में गोचर करेंगे, जिसके कारण यह वर्ष मेष राशि के लिए काफी शानदार रहेगा। गुरु मेष राशि के जातकों के लिए कुंडली में बारहवें भाव में गोचर करेंगे। पूरे साल भाग्य का साथ मिलेगा। इस वर्ष आपको पैतृक संपत्ति से बहुत अच्छा लाभ मिलेगा। व्यापार में आपकी नई योजनाएं सफल रहेंगी और उसमें अच्छी बढ़ोतरी होने के योग हैं। नौकरी-पेशा जातकों के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। साल के अंत में आपको बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। इस वर्ष आपको सेहत का विशेष खयाल रखना होगा। वैवाहिक और प्रेम जीवन के लिहाज से साल अच्छे से बीतेगा।

वृषभ : इस वर्ष आपकी राशि में शनिदेव चौथे भाव में रहेंगे। इस कारण आपको करियर में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ष आपको कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। इसका अच्छा परिणाम आपको मिलेगा। जमीन, मकान में निवेश के लिए यह साल आपके लिए अच्छा रहेगा। यह वर्ष आपके लिए भौतिक सुख-सुविधाओं में बढ़ोत्तरी वाला रहेगा। आपको धन प्राप्ति के नए-नए अवसरों की प्राप्ति होगी, जिसे हाथ से जाने नहीं देना है। परिवार में कोई बड़ा आयोजन इस साल हो सकता है, जिसके लिए आपको लंबे समय से इंतजार था। विदेश यात्रा का योग भी बन रहा है।

मिथुन : यह साल मिथुन राशि के जातकों के लिए बहुत ही लाभकारी और सौभाग्यशाली रहने वाला है। आमदनी के कई नए रास्ते खुलेंगे और समय के साथ-साथ आय में लगातार बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। कारोबार में उन्नति के मार्ग खुलेंगे। इस वर्ष आपको व्यापार में अचानक कोई अच्छा और मुनाफा दिलाने वाला सौदा हो सकता है। यह वर्ष आपके लिए भाग्योदय का साल रहने वाला साबित होगा, क्योंकि शनिदेव इस वर्ष आपके भाग्य के स्वामी होकर भाग्य भाव में मौजूद रहेंगे। शनि की विशेष कृपा के चलते आपको अचानक लाभ के प्रबल संकेत हैं। मिथुन राशि के जो जातक पिछले कई साल से लंबी बीमारी से जूझ रहे थे उनको इस वर्ष राहत मिल सकती है। साल के बीच में आपको नौकरी में पदोन्नति और विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं।

कर्क: आपकी राशि से इस साल गुरु दशम भाव में गोचर कर रहे हैं। इस कारण नौकरी के अच्छे प्रस्ताव आपको मिलेंगे। प्रतियोगी छात्र-छात्राओं के लिए साल कई रास्ते खोलेगा। सरकारी नौकरी प्राप्त करने के कइे मौके मिलेंगे। इस वर्ष आपकी आमदनी में बढ़ोतरी होगी और यह सब संपत्ति के लेन-देन से संभव होगा। कारोबार में बेतहाशा वृद्धि देखने को मिलेगी। अचानक से कुछ ऐसे मौके आएंगे जिसके कारण आपको धन लाभ होगा। लेकिन इस राशि के जातकों के शादीशुदा जीवन में कुछ तनाव देखने को मिल सकता है। पति-पत्नी के बीच तनाव बढ़ सकता है। ऐसे में मिल बैठकर तनाव को दूर करने का प्रसास करें। आपके साथ इस वर्ष कोई छोटी-मोटी दुर्घटना घट सकती है, इस कारण आपको

सचेत रहने की जरूरत है। नवंबर के महीने में राहु के राशि परिवर्तन के कारण आपको कार्यक्षेत्र में तनाव हो सकता है। साल के आखिरी दो महीनों में आपको सतर्क रहना पड़ सकता है, क्योंकि राहु आपके नवम भाव में गोचर करेंगे।

सिंह : साल 2023 में शनि देव आपकी कुंडली में राशि के सातवें भाव में विरामान होंगे। कुंडली के सातवें भाव में शनि उच्च के होते हैं। आमदनी के नए-नए स्रोत बनेंगे। यदि किसी प्रकार का कर्ज है तो इस वर्ष उससे छुटकारा मिल सकता है। जो लोग किसी लंबी बीमारी से पीड़ित है उन्हें साल के शुरुआत होते ही राहत मिलने लगेगी। अप्रैल का महीना आपके लिए अनुकूल नहीं होगा। आप किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। अक्तूबर में आपको इससे राहत मिलेगी। साल के अंत में शुक्र ग्रह का विशेष प्रभाव आपके ऊपर पड़ सकता है। इस कारण आपको धन की प्राप्ति, मान-सम्मान और सुख-सुविधा का लाभ मिलेगा। विदेश की यात्रा भी संभव है।

कन्या : इस साल शनि देव आपकी कुंडली के छठे भाव में गोचर कर रहे हैं, अचानक से धन लाभ मिल सकता है। इस वर्ष आपको किसी पुराने रोग से मुक्ति मिल सकती है। यह साल आपके लिए किसी वरदान से कम नहीं है। किसी मुकदमे में आपकी जीत हो सकती है। शत्रुओं पर विजय पा सकते हैं। नौकरी में अच्छे अवसरों की प्राप्ति होगी। सरकारी नौकरी में उच्च पद भी मिल सकता है। 22 अप्रैल को बृहस्पति अपनी राशि परिवर्तित करेंगे। इस कारण आप नई गाड़ी या जमीन-जायदाद की खरीदारी कर सकते हैं। ससुराल पक्ष से आर्थिक लाभ मिल सकता है, लेकिन इस वर्ष आपको कई बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है जिसके कारण मानसिक तनाव से गुजरना पड़ सकता है। आपकी राशि में शनि के छठवें भाव में विराजमान होने से समय अनुकूल नहीं रहेगा।

तुला : इस साल शनिदेव आपकी राशि से पांचवें भाव में गोचर करेंगे। साल 2023 तुला राशि वालों को धन लाभ के कई मौके देने वाला साबित होगा। इस साल आप किसी मंहगी संपत्ति की खरीदारी कर सकते हैं। वाहन की इच्छा पूरी होगी, पैतृक संपत्ति से लाभ के मौके मिलेंगे। नौकरी करने वाले जातकों के लिए यह वर्ष शानदार रहेगा। वेतन में वृद्धि और पदोन्नति मिल सकती है। छात्रों के लिए यह साल काफी मेहनत वाला होगा।

वृश्चिक : आपके लिए साल 2023 मिलाजुला रहने वाला होगा। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले आप अच्छी तरह से सोच-विचार करें। 17 जनवरी के बाद शनि की ढैय्या शुरू होने वाली है। देवगुरु बृहस्पति आपके लिए शुभ साबित होंगे। अप्रैल तक गुरु आपकी राशि में पांचवें भाव में रहेंगे फिर इसके बाद गुरु का गोचर छठे भाव में गोचर करेंगे। व्यापार के लिहाज से साल 2023 मुनाफा दिलाने वाला साल साबित हो सकता है। नौकरी-पेशा जातकों के लिए भी साल अच्छे से बीतेगा। नौकरी में पूरे साल उच्च अधिकारियों का साथ मिलेगा। जो प्रतियोगी छात्र सरकारी नौकरी के लिए प्रयासरत हैं उनको भी शुभ सूचना मिल सकती है। शनि का गोचर आपके चौथे भाव में होने से पारिवारिक रिश्तों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं। सेहत के लिहाज से यह वर्ष आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। आप बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। लेकिन आर्थिक लाभ के हिसाब से यह वर्ष आपके लिए अच्छा रह सकता है। कोई मकान या जमीन में खरीदारी कर सकते हैं।

धनु : धनु राशि वालों के लिए यह साल कुछ बड़ा और अच्छा रहने के संकेत है। साल के शुरुआत में ही आपको शनि की साढ़ेसाती से मुक्ति मिल जाएगी। कार्यक्षेत्र और करियर में आपको नए अवसरों की प्राप्ति होगी। यह साल आपके लिए बहुत ही भाग्यशाली वर्ष साबित होने जा रहा है। आपका आत्मविश्वास आसमान पर रहेगा, इस कारण आपके सभी अटके हुए काम इस वर्ष जरूर पूरे होंगे। अप्रैल में गुरु जो कि आपकी ही राशि के स्वामी हैं आपके लिए अच्छा रहेंगे। अप्रैल में गुरु का राशि परिवर्तन मेष राशि में होने से आपको अच्छी सफलताएं मिलेंगी। इस वर्ष परिवार में अच्छा मेलजोल रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों की राय किसी मुद्दे पर एक ही रहेगी। कोई भी निर्णय लेने से पहले सभी के साथ संवाद स्थापित होगा। इस वर्ष परिवार में कोई मांगलिक कार्यक्रम होने से सभी तरह की चिंताएं खत्म होंगी। शिक्षा के लिहाज से यह वर्ष ज्यादा कुछ मौके हासिल नहीं होंगे। धनु राशि के जातकों के खूब मेहनत करनी होगी तभी आपको सफलता मिलेगी। आपको एकाग्र होकर परीक्षा की तैयारी करने में कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि पांचवें भाव में राहु आपकी एकाग्रता को भंग करेगा। सेहत के लिहाज से यह साल ठीक-ठाक से बीतेगा।

मकर : आपकी राशि के स्वामी ग्रह शनि देव हैं। शनि देव न्याय और कर्म के देवता हैं। ये जितना कष्ट देते हैं उतना ही राजसी ठाठ-बाट भी दिलाते हैं। इस साल 30 वर्ष के बाद शनि कुंभ राशि में गोचर करेंगे। यह भी शनि की दूसरी स्वयं की राशि है। 17 जनवरी के बाद जब शनि कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे तो मकर राशि पर साढ़ेसाती का अंतिम चरण शुरू हो जाएगा। शनि की साढ़ेसाती का अंतिम चरण ज्यादा कष्टकारी नहीं होता है। ऐसे में यह साल आपके लिए बहुत ही शुभ और शानदार रहेगा। करियर और व्यापार के लिहाज से यह वर्ष बहुत ही उत्तम लाभ व सफलता दिलाने वाला होगा। अप्रैल के बाद गुरु भी राशि बदलकर मेष राशि में प्रवेश कर जाएंगे। आपको सकारात्मक परिणाम की प्राप्ति होगी। पूरे साल आपको भाग्य का साथ मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति में अच्छी-खासी बढ़ोतरी देखने को मिलेगी, क्योंकि शनि आपकी राशि से दूसरे भाव में गोचर करेंगे। साल 2023 में आपको किसी संपत्ति की खरीद-बिक्री से अच्छा मुनाफा प्राप्त होगा। लेकिन इस वर्ष आप किसी के साथ कोई काम साझेदारी में न करें आपको नुकसान होने का अंदेशा है। आपके ऊपर से साढ़ेसाती का अंतिम चरण चलने के कारण सेहत संबंधी कोई परेशानी नहीं आएगी। इस साल पारिवारिक जीवन में खुशियों को मनाने के लिए कई मौके प्राप्त होंगे। परिवार में चल रहे पुराने विवाद से छुटकारा मिल सकता है। छात्रों के लिहाज से यह साल अच्छी सफलता हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत वाला साल होगा।

कुंभ : साल 2023 में शनि देव आपकी ही राशि में प्रवेश कर रहे हैं। इसी के साथ आपकी राशि में शनि की साढ़ेसाती का दूसरा चरण शुरू होगा। इस साल आपको अनुशासन में रहते हुए सभी कार्यों को करना होगा। साल के शुरुआती महीनों में 10वें भाव में गुरु और शनि की दृष्टि पड़ने से आपके व्यापार में अच्छी तरक्की के संकेत हैं। व्यापार को फैलाने में साल 2023 आपका अच्छे से साथ निभाएगा। आपके सभी प्रयास आपको सफलताएं दिलाएंगे। जो लोग नौकरी में हैं उनके लिए कुछ तरह की बाधाएं आ सकती हैं। इसलिए आपको संभलकर फैसले लेने होंगे। नहीं तो नुकसान हो सकता है। 2022 की तुलना में यह वर्ष आर्थिक रूप से आपके लिए अच्छा हो सकता है। छात्र और प्रतियोगिता परिक्षाओं के लिहाज से शनि की दृष्टि आपकी राशि से तीसरे भाव पर होगी। अप्रैल के बाद

देवगुरु बृहस्पति का गोचर होगा इसलिए मेहनत करने पर ही अच्छे परिणाम आपको हासिल होंगे। सेहत के नजरिए से यह वर्ष मिलाजुला रहेगा।

मीन : आपके लिए साल 2023 अच्छा रहने के संकेत हैं। अप्रैल तक शुभ फल देने वाले देवगुरु बृहस्पति आपकी राशि में रहेंगे फिर मेष राशि में गोचर करेंगे। इसी के साथ शनि की दृष्टि तीसरे भाव पर होगी जहां पर अप्रैल के बाद देवगुरु बृहस्पति का गोचर होगा इसलिए जितनी मेहनत करेंगे उसका अपेक्षित परिणाम आपको मिलेगा। नौकरी-पेशा जातकों के लिए यह साल नौकरी में बदलाव लाने का साल साबित होगा। पदोन्नति और वेतन वृद्धि का अच्छा संकेत है। अप्रैल के बाद व्यापार में लगे हुए लोगों को अच्छा मुनाफा प्राप्त होगा। यह साल खर्च कराने वाला साल होगा। आप बचत कम कर पाएंगे। लेकिन अप्रैल के बाद गुरु के राशि परिवर्तन के बाद आपके खर्चों में कमी आएगी। निवेश के लिए साल अच्छा रहेगा। सेहत के मामले में यह साल मिला जुला रहने वाला होगा। साल 2023 में पारिवारिक जीवन में शांति रहेगी। लेकिन आपके ऊपर शनि की साढ़ेसाती का पहला चरण शुरू होने के कारण बीच-बीच में आपको कुछ पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

विजय जी का आभार

श्रीमान विजय गोयल, निवास स्थान वैशाली, गाजियाबाद के द्वारा अपने पूजनीय पिताजी स्व. रामकिशोर गोयल की स्मृति में सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन को 1,00,000/- (एक लाख रुपये) की राशि भेंट की है। केंद्र उनका हृदय से धन्यवाद करता है। ❐

स्व. रामकिशोर गोयल

श्रीराम सत्संग भवन में सामूहिक विवाह सम्पन्न

दिनांक 19 दिसम्बर को श्रीराम जानकी विवाह समिति नवीन शाहदरा के द्वारा आठ कन्याओं का विवाह वैदिक विधि से किया गया। समाज ने इस अवसर पर भरपूर सहयोग दिया। समिति 1995 से हर वर्ष सामूहिक विवाह समारोह आयोजित करती है। नया घर बसाने के लिए सभी आवश्यक सामान नव विवाहित जोड़ों को दिया जाता है। ❐

लघु कथा

एक आदमी रात को झोपड़ी में बैठकर एक छोटे से दीये को जलाकर कोई शास्त्र पढ़ रहा था। आधी रात बीत गई जब वह थक गया तो फूंक मार कर उसने दीया बुझा दिया। लेकिन वह यह देखकर हैरान हो गया कि जब तक दीया जल रहा था, पूर्णिमा का चांद बाहर खड़ा रहा। लेकिन जैसे ही दीया बुझ गया तो चांद की किरणें उस कमरे में फैल गईं। वह आदमी बहुत हैरान हुआ यह देखकर कि एक छोटे से दीए ने इतने बड़े चांद को बाहर रोक कर रखा। इसी तरह हमने भी अपने जीवन में अहंकार के बहुत छोटे-छोटे दीए जला रखे हैं जिसके कारण परमात्मा का चांद बाहर ही खड़ा रह जाता है। जब तक वाणी को विश्राम नहीं दोगे तब तक मन शांत नहीं होगा। मन शांत होगा तभी ईश्वर की उपस्थिति महसूस होगी। ❐

समग्र स्वास्थ्य की देखभाल आवश्यक

■ गिरीश्वर मिश्र

स्वस्थ रहते हुए ही मनुष्य निजी और सार्वजनिक, हर तरह का कार्य कर पाता है, यह सबको मालमू है। परंतु इसका महत्व तभी समझ में आता है, जब जीवन में व्यवधान का सामना करना पड़ता है। तब हम स्वास्थ्य को लेकर सचेत हो जाते हैं। कोविड महामारी के दौरान यह बात सबने अनुभव की। स्वास्थ्य और अस्वास्थ्य की उलझन नयी नहीं है और स्वास्थ्य रक्षा के उपायों को लेकर प्रत्येक समाज उपचार या चिकित्सा के समाधान ढूंढता रहा है। इस तथ्य के बावजूद कि ऐतिहासिक रूप से विभिन्न ज्ञान परंपराओं और भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में पनपने वाली विभिन्न उपचार प्रणालियों का सुदीर्घ काल से समानांतर अस्तित्व रहा है। आज वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने वाली जैव चिकित्सा बायोमेडिसीन या एलोपैथी का उपयोग प्रमुखता से स्वीकृत और प्रधान हो चुकी है। यह स्थिति चिकित्सकीय ज्ञान की वास्तविकता को खंडित रूप से देखती और प्रस्तुत करती है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति रोगी और स्वास्थ्य सेवा मुहैया करने वाले एजेंटों के बीच की दूरी के कारण एक गंभीर किस्म के आंतरिक तनाव को दर्शाती है। इसमें व्यक्ति का स्वास्थ्य तो व्यक्तिगत रहता है परंतु स्वास्थ्य की देखभाल करना एक पेशेवर या व्यावसायिक मामला बन गया है।

स्वास्थ्य को समझने के लिए पश्चिमी परंपरा में स्वीकृत मूल्य जैसे अहंकार पर बल, मन और शरीर का द्वैत और सारी प्रक्रिया में संस्कृति की भूमिका को नजरअंदाज करना स्वास्थ्य के बारे में एक खास किस्म का नजरिया है। यह अत्यधिक विशेषज्ञता 'सुपर स्पेशलिटी' पर जोर देता है। इसके विपरीत समग्रता से विचार करने की प्रवृत्ति स्थानीय पर्यावरण-सांस्कृतिक संदर्भों में स्थित होती है और उन तक आम आदमी की पहुंच आसान थी। ज्यादातर मामलों में स्वास्थ्य संबंधी प्रक्रियाओं को हर कोई आसानी से समझ सकता था। कहना न होगा कि उपचार की प्रक्रियाओं में रोगी के जीवन के व्यक्तिगत, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक सभी पहलू शामिल रहते हैं। इस पृष्ठभूमि में भारत में प्रचलित दृष्टिकोणों और संबंधित प्रथायें स्वास्थ्य और स्वास्थ्य देखभाल को एक समग्रता में ग्रहण करती है।

हिप्पोक्रेटिक शपथ में भी कहा गया है कि मनुष्य की भलाई हवा, पानी, भोजन और भूमि की स्थलाकृति (टोपोलोजी) से प्रभावित होती है। एक प्राणी एक

जीवित प्रणाली होता है। ऐसे ही ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने टिप्पणी की थी कि जब तक समग्र (होल) ठीक नहीं होगा, तब तक हमारे लिए कोई भी भाग (पार्ट) अच्छा नहीं हो सकता। हेल्थ और होलिज्म के शब्दार्थ एक-दूसरे से बहुत निकट से जुड़े हुए हैं। ग्रीक शब्द (होलोस) का अर्थ पूर्णता होता है। एक ही मूल से होल, हेल और होली बनते हैं। इस तरह समग्र की प्रधानता वाले दृष्टिकोण की जड़ें बड़ी प्राचीन हैं। भारत की स्वदेशी चिकित्सा प्रणाली (जैसे-आयुर्वेद, योग, सिद्ध) तथा तिब्बती, चीनी और अफ्रीकी परंपराओं में ध्यान और पारंपरिक चिकित्सा की विभिन्न प्रथाओं का उद्येश्य स्पष्ट रूप से रोग की रोकथाम, स्वास्थ्य संवर्धन, मनोदैहिक और पुरानी रोग स्थितियों का प्रबंधन और समग्र रूप से प्रतिरक्षा कार्यप्रणाली (इम्यून व्यवस्था) को अधिकाधिक समर्थ बनाने की है।

पंच महाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) मानव शरीर सहित हर चीज के भौतिक अस्तित्व का निर्माण करने वाले मूल (सामान्य) तत्व हैं। आयुर्वेद तीन दोष (यानी वात, पित्त और कफ) और तीन गुण (सत्व-प्रकाश, रजस-गत्यात्मकता और तमस-निष्क्रियता) पर निर्भर करता है। ये सब एक समग्र इकाई बनाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार रोगी, परिचारक, औषधि और चिकित्सक उपचार के चार स्तंभ हैं जिन पर स्वास्थ्य टिका होता है और साम्यावस्था की गत्यात्मक स्थिति पर कई तरह से जोर दिया जाता है। जैसा महान शल्य चिकित्सक आचार्य सुश्रुत ने कहा था-आत्म व स्व (आत्मा) इंद्रियों और मन की प्रसन्नता संयुक्त रूप से मिलकर स्वास्थ्य का निर्माण करते हैं-प्रसन्नातत्मेंद्रियमन- स्वस्थमित्यभिधीयते।

आचार्य चरक के अनुसार शारीरिक कार्यप्रणाली के सभी पहलुओं में साम्य की स्थिति को स्वास्थ्य का लक्षण कहते हैं (समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रिया)। भगवद्गीता में भी कहा गया है कि मन की समता या समत्व को योग कहा गया है। साथ ही उपयुक्तता पर विशेष जोर दिया गया है, जीवन के सभी पहलुओं में युक्त होना चाहिए। गीता का कहना है कि योग उसके लिए दुखों का नाश करने वाला होता है, जो भोजन करने और मनोरंजन में संयमित हैं, जो अपने कार्यों के दौरान अपने परिश्रम में मध्यम हैं, जो सोने और जागने में मध्यम हैं (गीता-6/17)। महर्षि पतंजलि के योग सूत्र (2/3) में जीवन के कष्टों (क्लेश) में पांच प्रमुख समस्यायें हैं-अविद्या (अज्ञान), अस्मिता (अहंकार), राग (आसक्ति), द्वेष (घृणा) और अभिनिवेश (जीवन से चिपटने की इच्छा) है। इसके समाधान के लिए राज योग, भक्ति योग और कर्म योग सहित योग की विभिन्न प्रणालियां प्रस्तावित हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि निदान और चिकित्सा में जैव-मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आदि सभी कारकों को ध्यान में रखा गया है। अब यह बात साफ हो चली है कि शरीर और मन का भेद करना और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य/अस्वास्थ्य को अलग-अलग देखना दोषपूर्ण है। स्वास्थ्य का एक समग्र नजरिया अपनाना जरूरी है।

चिकित्सा की स्वदेशी प्रणाली यह मानती है कि जीवित शरीर में खुद को ठीक करने की जन्मजात क्षमता होती है और इस दृष्टि से समग्र/संपूर्ण अपने विभिन्न भागों के योगफल से अधिक होता है। अब यह धीरे-धीरे महसूस किया जा रहा है कि मन और शरीर के बीच अलगाव की बात ठीक नहीं है। अब 'साइकोन्यूरोइम्यूनोलॉजी' जैसे चिकित्सा वैज्ञानिक अध्ययन विषय का उदय हो रहा है। भारतीय दृष्टि में प्राण की ऊर्जा ब्रह्मांड में सभी जीवों को जोड़ती है। मनुष्य होना वस्तुतः आध्यात्मिक होना है। वास्तव में पारंपरिक दवायें दिखा रही हैं कि व्यवस्था की सीमाएं धुंधली हैं और अब स्वदेशी हर्बल (जड़ी-बूटी) औषधि के रूप में नये अवतार में आ गया है।

समग्र स्वास्थ्य की दृष्टि से देखभाल करने में व्यक्ति या जन केंद्रित देखभाल प्रणाली शामिल होती है जो मन, शरीर और आत्मा को संबोधित करने वाली तरकीबों को भलीभांति एकीकृत करती है। संपूर्ण व्यक्ति और भागीदारी इसमें प्रमुख नियामक होते हैं।

इसका तात्पर्य स्वास्थ्य और बीमारी की एक प्रकार की गतिशील समझ से है। समानता, प्रभावशीलता, सुरक्षा, नैतिकता, किफायती लागत, पारंपरिक संवेदनशीलता तथा सामाजिक दुनिया के साथ संबंध जैसे मानदंडों को पूरा करने के लिए स्वास्थ्य का देखभाल करने वाली प्रणाली स्थापित करना बड़ी चुनौती है। संपूर्णता के रूप में स्वास्थ्य को शरीर तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसके लिए अध्ययन विषयों की सीमाओं को पार करने और जनकेंद्रित दृष्टिकोणों की ओर बढ़ने की आवश्यकता होगी। इस तरह का एक एकीकृत दृष्टिकोण भारत की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति-2017, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन-2020 और वैश्विक स्तर पर स्वीकृत किये गये सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के अनुरूप है। यह खुशी की बात है कि 2014 में भारत सरकार ने आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी प्रणालियों की जरूरतों को पूरा करने कि लिए आयुष मंत्रालय की स्थापना की और इन चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने के प्रयास किये जा रहे हैं।

समग्र स्वास्थ्य की देखभाल वाली सही और प्रभावी रोकथाम के तरीकों और रोग केंद्रित चिकित्सा की मांग करती है। हमें बीमारी के दौरान सही और गरिमापूर्ण पुनर्वास और सहायता स्थापित करने की भी आवश्यकता है ताकि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को ठीक से संपादित किया जा सके। स्वास्थ्य के लिए समग्र एकीकृत देखभाल में व्यायाम, सामाजीकरण, सुरक्षित आवास और पर्याप्त साधनों का प्रावधान शामिल है ताकि स्वास्थ्य से समझौता करने वाले प्रतिबंधों को हटाया जा सके। प्रासंगिक कानून के माध्यम से कमजोर, सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित और बुजुर्ग लोगों की सहायता के लिए सामाजिक देखभाल और समर्थन और गतिशील संगठनात्मक स्थितियों और सेवा वितरण की आवश्यकता होगी। दुर्भाग्य से समग्रता का उपयोग ग्राहकों को भर्ती करने के लिए एक आकर्षक लेबल के रूप में किया जाता है जो भ्रामक हो सकता है यदि जीवनविरोधी खतरनाक स्थितियों पर ठीक से ध्यान न दिया जाये। चूंकि समग्र दृष्टि से स्वास्थ्य की देखभाल करना (होलिस्टिक हेल्थ केयर) सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य, प्रभावी और व्यावहारिक है। इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए गंभीर प्रयास की आवश्यकता है। इससे स्वास्थ्य विषयक असमानता कम होगी, सामाजिक न्याय भी सुनिश्चित होगा और स्वास्थ्य के लिए उभरते संकटों का भी समाधान हो सकेगा।

(लेखक महात्मा गांधी अन्तराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति हैं)

अस्सी हो गए अस्सी पार

■ कृष्ण लाल भाटिया 'शिक्षार्थी'

(1)
पाकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

बाकी बच रहे दिन चार।
अवसर न चूके इस बार।
कर लीजे अपना उद्धार।।

चौरासी दा चक्कर छूटे।
सिमरन दी पर तार न टूटे।।

न टूटे सिमरन दी तार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।
ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।।

(2)
पाकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

चल चलिए चल दें हरिद्वार।
जहाँ मिले अमृत भण्डार।।

योग ध्यान स्नान करेंगे।
निर्मल पावन गंगा धार।।

दर्शन भजन पान किए ते।
होता है सबका उद्धार।।

पाकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

आ प्हुंचे भगीरथी द्वार।
जन मानस जहां बहुत उदार।।

यथा नाम गुण किए विचार।
भागीरथी गंगा साकार।।
हर हर गंगे लिये उचार
गंगा मैया देंगी तार।।

पाकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

खाटू श्याम जी यहां विराजे।
विराज रहे हैं पंचमुखी हनुमान

रख मन चंगा भागीरथी गंगा
कहते सखा सुजान।।

ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।
ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।।

(3)
पाकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

'राधे-राधे' कहूँ पुकार।
बस कीजे इतना उपकार।।

मिलबा दीजे कृष्ण मुरार।
चरण शरण चाहूँ सरकार।।

सुन लीजे यह करुण पुकार।
मत कीजे हमसे इनकार।।

पाकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।
ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।।

(4)
पकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

याद आ रहा गुरु का द्वार।
जहाँ मिला जीवन आधार।।

गुरु की महिमा अगम अपार।
गुरु के बिना नहीं निस्तार।।

मोह माया का बंधन टूटे।
गुरु की याद कभी न छूटे।।

न छुट्टे गुरु की यादार।
अस्सी हो गए अस्सी पार।।

ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।
ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।।

(5)
अस्सी हो गए अस्सी पार।
देखा दुखिया सब संसार।।

दुख चिन्ता को मेटे प्यार।
सेवा कर सुख मिले अपार।।

सन्तोषी ही सदा सुखी है।
जो मिलता है उसमें सार।।

योग क्षेम प्रभु वहन करेंगे।
सेवा सिमरन नहीं विसार।।

पाकर प्रभु की कृपा अपार।
अस्सी हो गए अस्सी पर।।

ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।
ऊँ हरि ऊँ हरि हरि हरि ऊँ।।

मन की गाँठ

■ विजय कुमार

पिछले दिनों मैं रेलगाड़ी से हरिद्वार से दिल्ली आ रहा था। सर्दी के दिन थे। मेरे पड़ोसी यात्री के मफलर पर 'नवभारत उद्योग, हरिद्वार' का लेबल लगा था, जबकि मेरे मफलर पर 'भारत उद्योग, हरिद्वार' का। इस सुखद संयोग पर बात छिड़ी, तो उन्होंने 'भारत' और 'नवभारत उद्योग' की कहानी सुनाई। इसके मुख्य पात्र हैं- शशिबाबू, यानी शशिकांत गुप्ता। उनके पिता श्री भारत भूषणजी 1930 में हरिद्वार आए थे। कुछ साल उन्होंने चाय-पकौड़ी बेची। फिर कुछ पैसे हो गए, तो बाजार में एक दुकान किराए पर लेकर, वहाँ गरम कपड़े बेचने लगे। धीरे-धीरे यह काम जम गया।

हरिद्वार एक धर्मनगरी है। पूरे साल तीर्थयात्री यहाँ आते रहते हैं। चाय वाला हो या रिक्शाचालक, कपड़े बेचने वाला हो या पूजा सामग्री वेचने वाला, पंडित एवं साधु हो या भिखारी, सबकी रोटी-रोजी यात्रियों पर ही निर्भर है। हरिद्वार के दुकानदार भी बहुत समझदार हैं। जिस समय जहाँ के यात्री अधिक आते हैं, वे उसी भाषा के बैनर लगा लेते हैं। उधर की भाषा बोलने वाले एक-दो कर्मचारी भी रख लेते हैं। भारतबाबू भी शीघ्र ही यह सब तौर-तरीके सीख गए। धीरे-धीरे उनका कारोबार और परिवार बढ़ता गया। उनके दो बेटे थे- रविकांत और शशिकांत। रवि शुरू से ही पिताजी के साथ दुकान पर बैठ गया; पर शशिकांत ने बीएए तक पढ़ाई की। वह चाहता था कि या तो कोई सरकारी नौकरी मिल जाए या फिर वह कोई और कारोबार करे।

आजादी के बाद भारत में कई बड़े सरकार उद्योगों की स्थापना की गई। उनमें से एक था 'भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड' यानी 'भेल'। हरिद्वार के पास मीलों लंबी-चौड़ी भूमि अधिग्रहित कर इसे बनाया गया। आज भी यह सरकार के 'नवरत्न' उद्योगों में से एक है। इससे प्रोत्साहित होकर उत्तर प्रदेश सरकार ने भी 'भेल' से लगी हुई हजारों एकड़ भूमि को 'औद्योगिक क्षेत्र' घोषित कर दिया। वहाँ उद्योग लगाने वालों को अनेक छूट दी गई। अतः शीघ्र ही वहाँ उद्योगों का जाल बिछ गया। भारतबाबू ने भी वहाँ जगह ले ली। वहाँ वे शशिकांत के लिए गरम कपड़े बनाने की फैक्टरी लगाना चाहते थे। लुधियाना में यह काम काफी होता था। शशि की भी इसमें रुचि थी। अतः उन्होंने काम सीखने के लिए उसे वहाँ भेज दिया।

दो साल बाद लुधियाना से ही कुछ पुरानी मशीनें लेकर शशिबाबू ने 'भारत वस्त्र उद्योग' के नाम से अपनी फैक्टरी लगा ली। शीघ्र ही 'भारत वस्त्र उद्योग' ने गरम कपड़ों के बाजार में अपनी जगह बना ली।

शशिबाबू ने कुछ सिद्धांतों का सदा पालन किया। वे कर्मचारियों हो परिवार का सदस्य मानकर उनके सुख-दु:ख का सदा ध्यान रखने थे। अत: कर्मचारी भी उन्हें अपने बड़े भाई जैसा सम्मान देते थे। शशि की कोशिश रहती थी कि वे कभी उधार न लें; फिर भी कभी-कभी जरूरत पड़ ही जाती थी; लेकिन हर हाल में उसे वह समय से चुका देते थे। ग्राहक को जो माल, जिस समय देने का वादा किया होता था, वह उसे हर हाल में भेज देते थे।

एक बार मजदूरों की हड़ताल के कारण पैकिंग नहीं हो सकी। ऐसे में शशिबाबू पत्नी और बच्चों के साथ खुद पैकिंग में जुट गए। यह देखकर मजदूर भी काम पर लौट आए। एक बार लुधियाना में हड़ताल के कारण माल न आने से कपड़ों के दाम बढ़ गए; पर शशिबाबू ने पूर्व निर्धारित मूल्य पर ही अपना सामान बेचा। इस प्रतिष्ठा के कारण वे कई बार 'हरिद्वार उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष भी चुने गए।''

कारोबारी सक्रियता के 30 साल में शशिबाबू ने अपनी तीनों बेटियों और एकमात्र बेटे पवन का विवाह कर दिया। धीरे-धीरे पवन ने फैक्टरी सँभाल ली। एकमात्र पुत्र होने के कारण वह कुछ अक्खड़ स्वभाव का था। शशिबाबू ने एक-दो बार उसे टोका भी, पर उसका स्वभाव नहीं बदला। अत: वे सामाजिक-धार्मिक कामों में अधिक रुचि लेने लगे। फिर भी वे दो घंटे फैक्टरी में बैठते जरूर थे; लेकिन जीवन के संध्याकाल में उन्हें एक ऐसा झटका लगा, जिसके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था।

हरिद्वार की 'माँ गंगा सेवा समिति' हर साल गरीब विवाह कराती थी। लोग खुले दिल से इसमें सहयोग करते थे। हर बार कोई एक व्यक्ति 'मुख्य संरक्षक' बनकर सबके भोजन का खर्च उठाता था। इस बार समिति ने शशिबाबू से इसका आग्रह किया। लगभग दो लाख रुपए का खर्च था। शशिबाबू ने इतना मोटा चंदा कभी नहीं दिया था, पर जब समाज के बड़े लोग आकर बैठ गए, तो उन्हें झुकना ही पड़ा।

इस बात से पवन भड़क गया। शशिबाबू ने उसे शांत करने का बहुत प्रयास किया, पर उसका गुस्सा बढ़ता हो गया। उसने साफ कह दिया कि भविष्य में बिना उससे पूछे वे कोई चंदा नहीं देंगे। शशिबाबू हक्के-बक्के गए। उन्हें लगा कि अभी तो मकान और फैक्टरी उनके ही नाम है। फिर भी पवन का दिमाग इतना गरम है। जब वे थक जाएँगे, तब क्या होगा?

अगले कुछ दिन शशिबावू बहुत शांत रहे। इस फैक्टरी के साथ ही है और उनका एक प्लॉट और था। दस साल पहले इसे यह सोचकर उन्होंने लिया था कि भविष्य में कभी फैक्टरी का विस्तार हुआ, तो यह जगह काम आएगी। शशिबाबू ने यहाँ एक नई फैक्टरी बनाने का काम शुरू कर दिया। भारत वस्त्र उद्योग' की जमीन उनके नाम थी, पर उसे उन्होंने नहीं छेड़ा। फैक्टरी के बैंक खातों में भी उनका नाम था। वहाँ इतना धन छोड़कर कि जिससे काम न रुके, बाकी धन उन्होंने निकाल लिया। बाजार में उनकी भारी प्रतिष्ठा थी। अत: उन्हें मनचाहा उधार मिल गया। कुछ ही दिन में नई मशीनें और कच्चा माल भी आ गया। इस तरह साल भर में ही 'नवभारत वस्त्र उद्योग' चालू हो गया। पुरानी फैक्टरी को उन्होंने पूरी तरह पवन को ही सौंप दिया।

पवन खुद को बहुत तीसमारखाँ समझता था, पर जल्दी ही उसे जमीनी सच समझ में आ गया। शशिबाबू की अनुपस्थिति से फैक्टरी का अनुशासन बिगड़ गया। अत: दुकानदारों तक माल देरी से पहुँचने लगा। कई पुराने कर्मचारियों ने उससे नाराज होकर फैक्टरी छोड़ दी। पवन ने नए कर्मचारी रखे, पर उन्हें काम सीखने में काफी दिन लग गए। जल्दीबाजी के चक्कर में माल की गुणवत्ता घटने लगी। दूसरी ओर 'नवभारत उद्योग तेजी से बढ़ रहा था। दुकानदार 'भारत उद्योग' की बजाय 'नवभारत उद्योग' से माल मँगाने लगे। शशिबाबू

ने अपने भतीजे कमल को भी साथ लगा लिया। परिणाम यह हुआ कि दो साल में ही 'भारत उद्योग' घाटे में आ गया।

शशिबाबू का मकान काफी बड़ा था। बैठक कक्ष, रसोई तथा सबके आवास नीचे ही थे। प्रथम तल पर भी दो कमरे और एक छोटी रसोई थी। अलग काम के बावजूद वे सब एक साथ ही रहते थे। शशिबाबू और पवन में तो बोलचाल बंद थी, पर उसकी पत्नी और बच्चे घर में घुल-मिलकर रहते थे। विवाद के बावजूद पवन की पत्नी ने सास-ससुर की सेवा में कोई कमी नहीं आने दी। एक दिन घर में पवन किसी बात पर अपने पिताजी से उलझ रहा था। इस पर उसकी माँ ने भी उसे डाँट दिया। बस फिर क्या था। पवन गुस्से में आकर नीचे की बजाय ऊपर ही रहने लगा। यहाँ तक कि उसने रसोई भी अलग कर ली।

कारोबार का अलगाव घर में पहुँचते देख शशिबाबू ने अपने घनिष्ठ मित्र और 'हरिद्वार उद्योग व्यापार संघ' के अध्यक्ष आहूजाजी से बात की। आहूजाजी से उनके घरेलू संबंध थे। पवन भी उन्हें चाचाजी कहता था। एक दिन जब पवन किसी काम से उनके पास गया तो इस बारे में बात छिड़ गई।

"सुना है बेटा, आजकल तुम्हारा काम ढीला चल रहा है?''

"हाँ चाचाजी, जब पेड़ लगाने वाला ही जड़ काटने लगे तो फिर पेड़ कैसे बचेगा?''

"मैं समझा नहीं, बेटा?''

"चाचाजी, आपको तो मालूम ही है। पिताजी ने नई फैक्टरी लगा ली अब वे मेरी फैक्टरी बंद कराना चाहते हैं।''

"पर कोई पिता अपने बेटे की फैक्टरी बंद क्यों कराएगा?''

"ये तो आप उनसे ही पूछिए, चाचाजी?''

"उनसे तो पूछ लेंगे, पर तुम भी तो बताओ क्या बात है?''

"एक बार किसी बात पर हमारी आपस में गरमागरमी हो गई। इससे नाराज होकर उन्होंने दूसरी फैक्टरी लगा ली।''

"तो क्या वे तुम्हारी फैक्टरी से मशीनें उठाकर ले गए, क्या उन्होंने तुम्हारे कर्मचारियों को तोड़ा है, क्या उन्होंने फैक्टरी के खाते से सारा पैसा काल लिया है?''

"जी नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है।''

"फिर तुम कैसे कह सकते हो कि वे तुम्हारा काम बंद कराना चाहते हैं?''

"लेकिन जब से उनकी फैक्टरी लगी है, भारत उद्योग' लगातार पीछे जा रहा है।''

"तो तुम अपने गिरेबान में झाँको। या तो तुम्हारी मेहनत कम है या तुम्हारे माल और व्यवहार में कोई कमी है।''

"मैं तो अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहा हूँ, फिर भी।''

"तो घबराओ नहीं, कारोबार में उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं, पर तुम पिताजी से कुछ गरमा-गरमी की बात कह रहे थे। वह बात क्या थी?''

"चाचाजी, आपने सुना होगा कि पिताजी ने तीन साल पहले 'माँ गंगा सेवा समिति' को दो लाख रुपए चंदा दिया था।''

"हाँ, शशिबावू ने यह बहुत अच्छा काम किया था।''

"पर इस समय फैक्टरी में मेहनत तो मैं कर रहा हूँ। इसलिए पैसे पर पहला हक मेरा है, लेकिन पिताजी ने बिना मुझसे पूछे चंदा दे दिया। बस इसी बात पर बहस हो गई।''

"पवन बेटे, तुम्हारा काम क्यों घट रहा है, यह मैं समझ गया। इस बरबादी का कारण तुम खुद ही हो। तुम्हारे सिर पर अहंकार सवार है। तुम खुद को अपने बाप से भी बड़ा समझने लगे हो। व्यापार सिर्फ मेहनत से नहीं, बुजुर्गों के आशीर्वाद और उनकी बनाई साख से भी चलता है।''

"लेकिन 'भारत उद्योग' की तो बाजार में बड़ी साख है?''

"है नहीं, थो; और वह शशिबाबू के कारण थी। इसीलिए वह उनके साथ चली गई। यदि साख 'भारत उद्योग' की थी तो अब उसे क्या हुआ? यदि फैक्टरी तुम्हारे परिश्रम से चल रही है तो तुम तो अब भी वहीं हो। फिर?''

"जी...।''

"यह बात ठीक है कि बच्चे जब बड़े हो जाएँ तो हर महत्त्वपूर्ण विषय पर उनसे बात होनी चाहिए। मुझे भी लगता है कि शशिबाबू को चंदा देने से पहले तुम्हें विश्वास में लेना चाहिए था, पर जिस समाज में हम बैठे हैं, कई बार न चाहते हुए भी वहाँ के बड़े लोगों की बात माननी पड़ती है। 'माँ गंगा सेवा समिति' बहुत अच्छा काम कर रही है। जरा सोचो, गरीबी के कारण जिन घरों में 30-35 साल की लड़कियाँ कुँवारी बैठी हैं, उनके माँ-बाप को नींद कैसे आती होगी? जब पड़ोस में कोई शादी होती है तो उन लड़कियों के दिल पर क्या बीतती होगी? यदि कोई ऐसा शुभ काम करता है तो उन लड़कियों और उनके माता-पिता के दिल से निकले आशीर्वाद की कीमत लाखों रुपए से बढ़कर होती है। और तुम कहते हो कि पिताजी तुमसे पूछ कर चंदा दें। बच्चों को अपने माँ-बाप से पूछना चाहिए या माँ-बाप को अपने बच्चों से? शर्म आनी चाहिए तुम्हें अपनी इस सोच पर। यही तुम्हारी बरबादी का कारण है।''

"जी मुझसे भूल हो गई, पर मुझे अब क्या करना चाहिए?"

"तुमसे भूल नहीं, भारी गलती हुई है। भूल अनजाने में होती है और उसे सुधारा जा सकता है, पर गलती जानबूझकर की जाती है। इसे समझे बिना तुम गलती पर गलती किए जा रहे हो।''

"गलती पर गलती?''

"और क्या, मैंने सुना है कि तुमने रसोई भी अलग कर ली है।'' "जी, की तो है।''

"फिर? तुमने बाप से झगड़कर अपना आज बिगाड़ा है, लेकिन माँ से लड़कर अपना कल भी खराब कर लिया। तुम क्या समझते हो कि तुम्हारे बच्चों की आँखें बंद हैं? कल जब कारोबार उनके हाथ में आएगा, तब यदि तुम्हारे साथ वे ऐसा ही व्यवहार करेंगे, तब क्या होगा? बच्चों से उनके दादी दादा का प्यार छीनना बहुत बड़ा पाप है। सजा भुगतकर आदमी अपराध से तो मुक्त हो सकता है, पर पाप-पुण्य का खाता तो अगले जन्म तक जाता है। इससे कैसे बचोगे?''

पवन सिर झुकाकर चुप बैठा रहा। आहूजाजी समझ गए कि चोट सही जगह पर लगी है। कुछ देर बाद पवन बोला, "पर चाचाजी, मुझे अब क्या करना चाहिए। मैं हर तरह से अपनी गलती मानने को तैयार हूँ।''

"पहले तुम दो-चार दिन ठंडे मन से सोच लो। फिर यदि मेरे सहयोग की जरूरत हो तो बताना।''

"मैंने सोच लिया है। अब आप ही कोई रास्ता निकालिए।''

"तो शशिबाबू को बताओ कि कल रात का खाना मैं उनके साथ खाऊँगा।''

"जी बिल्कुल।''

गाँठ तो पवन के मन में ही थी। वह खुली तो बात सुलझ गई। आहूजाजी की उपस्थिति में पवन ने पिताजी और माँ से पैर छूकर माफी माँगी। शशिबाबू ने उसे गले लगा लिया।

अगले दिन से शशिबाबू दोनों जगह बैठने लगे। 'नवभारत उद्योग' उन्होंने अपने भतीजे कमल को सौंप दिया। पवन ने भी अपना व्यवहार सुधार लिया। अत: 'भारत उद्योग' भी पटरी पर आ गया। धीरे-धीरे दोनों फैक्टरियों ने खूब उन्नति की। अब तो सारा काम पवन और कमल के बच्चे सँभाल रहे हैं।

बात करते-करते दिल्ली आ गया। सब लोग सामान समेटने लगे। मैंने कहा, "आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई, पर आपका परिचय नहीं जान सका।'' उन्होंने जेब से निकालकर अपना परिचय पत्र मुझे दिया और नीचे उतर गए। उस पर लिखा था- कमलकांत गुप्ता, प्रबंध निदेशक, नवभारत उद्योग, हरिद्वार।

(साभार : साहित्य अमृत)

अंदर की उमंगें बनाती हैं युवा

■ प्रतिनिधि

हमारी उम्र कभी पीछे नहीं जा सकती, बल्कि हम चाहें-न-चाहें, समय के साथ यह आगे ही जाएगी। अगर कोई व्यक्ति सत्तर वर्ष का है, तो वह साठ का नहीं हो सकता; क्योंकि समय के कालचक्र में वह साठ वर्ष की उम्र से गुजर चुका है। जब भी कोई व्यक्ति साठ वर्ष की उम्र पार करता है, तो अक्सर उसके रिटायर होने की बात होती है। हमारे समाज में एक आम धारणा है कि बूढ़े लोग इस उम्र में आकर असामान्य हरकतें करते हैं, लेकिन यह एक रूढ़ धारणा से अधिक और कुछ भी नहीं है।

हमारा शरीर समय के साथ जवान हो, यह संभव हो या न हो, लेकिन हमारा मन समय के साथ जवान हो सकता है और इसके लिए हमें अपने मन की दिशा को सकारात्मकता की ओर मोड़ना होगा; क्योंकि शरीर और मन एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं, मन की गतिविधियों का पूरा प्रभाव शरीर पर पड़ता है और शरीर की क्रियाविधियों का प्रभाव मन पर पड़ता है। यदि शरीर की उम्र को देखकर मन यह मान ले कि वह बूढ़ा हो रहा है, तो निश्चित रूप से मन भी बूढ़ा होने लगेगा, क्योंकि उसने ऐसा मान लिया है। यदि मन यह माने कि उसका शरीर समय के साथ भले ही बूढ़ा हो रहा है, पर मन अभी पहले जैसा ही जवान है, मन में पहले से अधिक अनुभव हैं, मन में पहले से अधिक सक्रियता है, अच्छी-अच्छी योजनाएँ हैं, तो मन की यह ऊर्जा वृद्ध हो रहे शरीर को भी सक्रिय बना देती है।

जब हम किसी औजार को अनुपयोगी व निष्क्रिय मान लेते हैं, उसका उपयोग करना बंद कर देते हैं, तो वह औजार भी अपनी क्षमता खोने लगता है और समय के साथ उसके कलपुरजे जाम हो जाते हैं, काम करना बंद कर देते हैं। इसके विपरीत यदि किसी उपकरण या औजार से हम लगातार काम लेते हैं, तो वह किसी नए औजार से भी अधिक हमारे लिए मूल्यवान व उपयोगी होता है और हमारे कार्यों में हमारा साथ देता है। ठीक यही बात मनुष्य जीवन के साथ भी है। यदि हम अपने शरीर को लगातार सक्रिय रखते हैं, सकारात्मक सोचते हैं, सृजनात्मक कार्य करते हैं, तो हमारी यह सक्रियता हमें अपने समाज के लिए उपयोगी बना देती है। ऐसा व्यक्ति फिर नए लोगों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन जाता है और अपने समान अनेक लोगों की मानसिकता को बदलता है और उन्हें भी उपयोगी बना देता है।

वर्तमान में हमारे समाज में 'फिट एंड फाइन दिखना है' यह सोच रखने वालों की तादाद बहुत तेजी से बढ़ रही है। इसके कारण उम्र को पीछे धकेलकर आगे बढ़ने की ख्वाहिश हर चेहरे पर देखी जा सकती हैं। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि फिटनेस इंडस्ट्री आज लगभग 19 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। अब स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि बॉडी इमेज यानी मेरा शरीर कैसा दिखता है, को लेकर हर उम्र के लोग सचेत नजर आ रहे हैं, क्योंकि शरीर की अवस्था को देख करके ही उम्र का पता लगता है। यदि शरीर की उम्र छिपा दी जाए, तो फिर कोई उसे बूढ़ा नहीं कहेगा।

आजकल सब जगह ऐसे बुजुर्ग देखने को मिल जाते हैं, जो इतने फिट नजर आते हैं कि उन्हें देखकर

उनकी वास्तविक उम्र का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। हालाँकि इस फिटनेस क्रांति का दायरा बहुत छोटा है और यह केवल शहरों व महानगरों की आबादी तक ही सीमित है; क्योंकि आज भी हमारे समाज में ऐसे लोगों की संख्या बहुत ज्यादा है, जो बुढ़ापे को अपने जीवन का ठहराव काल मान लेते हैं, जहाँ शरीर को मात्र ढोना होता है, दूसरों पर आश्रित रहना होता है और मन को बस पूजा-पाठ और धार्मिक कार्यों में लगाना होता है। बुढ़ापे का स्वागत करने की बात तो दूर, अक्सर चालीस की उम्र के बाद से ही बुढ़ापे की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं।

कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में मनोचिकित्सा की एक प्रोफेसर 'एलिसा एपेल' जो जीवनशैली व उम्र के बीच तालमेल पर अध्ययन कर रही हैं, उनके अनुसार- यदि आप बेहतर जिंदगी चाहते हैं तो आपको अपनी दिनचर्या में वे सब बदलाव करने होंगे, जो आपको फिट बना सकते हैं; क्योंकि वक्त के साथ बदलना और परिस्थितियों के संग ढलते जाने का नाम ही जिंदगी है और इसके लिए फिट रहना बहुत जरूरी है। मनोविशेषज्ञों के अनुसार- यदि आप खुद से प्यार करते हैं और 'जियो व जीने दो' वाली बात को अपने जीवन पर लागू करते हैं, तो फिर न ही हमें जिम्मेदारियाँ रुलाती हैं और न ही बढ़ती उम्र, क्योंकि फिर आपका पूरा ध्यान अपनी जीवनशैली पर होता है।

वर्तमान जीवन का सच है कि आज हमारे परिवार सिकुड़ते जा रहे हैं और इन सिकुड़ते परिवारों में सभी सदस्यों की अपनी एक अलग दुनिया है। इसमें भी बुजुर्गों की दुनिया सबसे अलग है। आज बड़ी संख्या में बुजुर्ग घर में या घर के बाहर पार्कों में अकेले बैठे दिखते हैं। अन्य कारणों को यदि दरकिनार किया जाए तो उनके जीवन में यह अकेलापन इसलिए भी देखा गया है; क्योंकि ऐसा माना जाता है कि वे बुजुर्ग हैं, बीमार हैं, इसलिए कोई काम करने में असमर्थ हैं। मनोविशेषज्ञों के अनुसार- यदि मन मान ले कि हम बुजुर्ग हैं, इसलिए असमर्थ हैं, तो निश्चित रूप से ऐसा ही होगा।

काम-काज की उम्र पार करने के बाद अचानक जीवन की रेस से बाहर हो जाने का क्षोभ बुजुर्गों के चेहरों पर आसानी से पढ़ा जा सकता है। इसलिए रिटायर होने के बाद हम क्या करेंगे? इसकी प्लानिंग अब तीस वर्ष की उम्र के बाद ही होने लगती है। यह तथ्य है कि रिटायर होने के बाद भी इन्सान की क्षमता में ज्यादा फरक नहीं पड़ता। यही वजह है कि विदेशों में सेवानिवृत्ति के बाद भी उम्रदराज लोगों से उनके अनुभवों के आधार पर सेवा ली जाती है। हालाँकि अब यह प्रचलन भारत में भी कहीं-कहीं पर देखा जा रहा है, लेकिन इसकी रफ्तार बहुत उत्साहजनक नहीं है; क्योंकि आमतौर पर यहाँ रिटायरमेंट को व्यक्ति की क्षमता से जोड़कर देखा जाता रहा है। इस बारे में जापान की कॉस्मेटिक कंपनी पोला का जिक्र किया जा सकता है, जहाँ केवल बुजुर्ग कर्मचारियों को ही काम पर रखा जाता है। यहाँ 80 से 100 साल तक की महिलाएँ काम करती हैं। कंपनी का ऐसा मानना है कि वे अपने अनुभव के आधार पर बेहतर सेवाएँ दे सकती हैं।

चेहरे पर छा जाने वाली खुशी व रौनक ही व्यक्ति को जवान बना देती है और मन पर छाने वाली सकारात्मकता व्यक्ति को उत्साह-उमंग से भर देती है। इसलिए उम्र चाहे कितनी भी हो, चेहरे की मुस्कराहट व मन का उत्साह कम नहीं होना चाहिए। यदि कोई यह सोचे कि बचपन व जवानी का समय हमारा अच्छा था और अब बुढ़ापे का यह दौर अच्छा नहीं है, तो ऐसी सोच निराशा ही पैदा करेगी। जीवन के हर दौर की अपनी खामियाँ व खूबियाँ हैं, इसलिए जीवन का कोई भी दौर अच्छा या बुरा नहीं होता, बल्कि उसे अच्छा या बुरा बनाया जा सकता है और यह हमारे दृष्टिकोण व मानसिकता पर निर्भर है। इसलिए बुढ़ापे का आनंद लेना भी हमें आना चाहिए।

यदि हमारे चेहरे पर रौनकता है, सक्रियता है, मुस्कराहट है तो उम्रदराज चेहरा भी सुंदर व जवान दिखता है, लेकिन यदि चेहरे पर उदासी है, निष्क्रियता है, निराशा व अवसाद है, तो जवान चेहरा भी बुझा हुआ व बदसूरत दिखता है इसलिए बुढ़ापे की सुंदरता कभी कम नहीं पड़नी चाहिए, बल्कि समय के साथ बढ़नी चाहिए, क्योंकि अंदर की उमंगें ही हमें वास्तव में युवा बनाती हैं। ❐

(साभार : युग निर्माण योजना)

संत शिरोमणि रविदास

■ भूषण लाल पाराशर

कह रैदास तेरी भगति दूरी है, भाग बड़े से पावे।
तजि अभिमान मेटि आया पर, पिपिलक ह्वै चुनिखावे।।

इन विचारों का आशय यह है कि ईश्वर की भक्ति बड़े भाग्य से प्राप्त होती है। अभिमान तथा बड़प्पन का भाव त्यागकर विनम्रतापूर्वक आचरण करने वाला मनुष्य ही ईश्वर का भक्त हो सकता है। विशालकाय हाथी शक्कर के कणों को चुनने में असमर्थ रहता है; जबकि छोटे शरीर की पिपीलिका (चींटी) इन कणों को सरलतापूर्वक चुन लेती है। ये विचार संत रविदास के हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक बुराइयों को समाप्त किया तथा व्यक्ति को धार्मिक कर्मकांड करने के वजाय कर्मयोगी बनने के लिए प्रेरित किया।

रविदास लोकवाणी में लिखते थे, इसलिए जनमानस पर उनके लेखन का सहज प्रभाव पड़ता था। उनकी रचनाओं में सदैव मानवीय एकता व समानता पर बल दिया जाता था। वे मानते थे कि जब तक हमारा अंतर्मन पवित्र नहीं होगा, तब तक हमें ईश्वर का सान्निध्य नहीं मिल सकता है। दूसरी ओर, यदि हमारा ध्यान कहीं और लगा रहेगा तो हमारा मुख्य कर्म भी बाधित होगा तथा हमें कभी भी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती है। जो बातें उन्होंने स्वयं के अनुभव से जानीं, उन्हें ही अपनी रचनाओं के माध्यम से आमजन को बताया। उनके जीवन की एक प्रमुख घटना से पता चलता है कि वे गंगास्नान के बजाय खुद के परिष्कार को संपन्न करने को प्राथमिकता देते हैं।

संत रविदास ने कहा कि लगातार कर्मपथ पर बढ़ते रहने पर ही सामान्य मनुष्य को मोक्ष की राह दिखाई दे सकती है। अपने पदों व साखियों में वे किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए श्रम को ही मुख्य आधार बताते थे। इसलिए वे मध्यकाल में भी अपनी बातों से आधुनिक कवि के समान प्रतीत होते हैं। वे लिखते हैं-

जिह्वा सों ओंकार जप, हत्थन सों करि कार।
राम मिलहिं घर आई कर, कहि रविदास विचार।

एक पद में नाम की महत्ता को बताते हुए राम-नाम के जप पर जोर देते हैं, जिससे सगुण ब्रह्म की शक्तिशाली सत्ता का मोह टूट जाता है और शासन की जगह समानता का स्वर बुलंद होता है। अपने समय के नानक, कबीर, सधना व सेन जैसे कवियों की तरह रविदास भी इस बात को समझते थे कि सगुण अवतार जहाँ शासन-व्यवस्था को जन्म देता है, वहीं निर्गुण राम समानता के मूल्य के साथ खड़े होते हैं, जो अपनी चेतना में एक आधुनिक मानस को निर्मित करते हैं-

नामु तेरो आरती भजनु मुरारे,
हरि के नाम बिनु झूठै सगल पसारे।

ऐसे पदों के आधार पर रविदास अपने समय की शक्तिशाली प्रभुता को उसके अहंकार का वोध कराते हैं। वे समान दृष्टि रखने वालों का आह्वान करते हैं, जो उन्हें आज भी प्रासंगिक बनाता है।

बनारस के दक्षिणी छोर पर स्थित सीर गोवर्धन में छह शताब्दी पहले पैदा हुए थे संत रविदास। उनका जन्म सन् 1388 का माना जाता है। रैदास कबीर के समकालीन थे द्य कबीर ने 'संतन में रविदास' कहकर इन्हें मान्यता दी है। महान भक्त मीरा ने उन्हें गुरु के रूप में वरण किया था। इनकी ख्याति से प्रभावित होकर तात्कालिक बादशाह सिकंदर लोदी ने उन्हें दिल्ली आने का आमंत्रण भेजा था। वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते और उन्हें भावविभोर होकर सुनाते। वे मानते थे कि ईश्वर एक है। उसे मानने वाले लोगों ने उसे अलग-अलग नाम दे दिया है। इनके 40 पद 'गुरुग्रंथ साहब' में न केवल शामिल किए गए, बल्कि लोकजीवन में अत्यंत प्रसिद्ध भी हुए।

मान्यता है कि रविदास जी के साथ भेदभाव भी खूब हुआ था, जिसका दरद उनकी रचनाओं और उनके इर्द-गिर्द बुनी गई कथाओं में भी देखा जा सकता है। उनकी विद्वत्ता को बड़े-बड़े विद्वान भी स्वीकार कर उन्हें दंडवत् प्रणाम करते हैं।

रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में सरल, व्यावहारिक

ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी खड़ी बोली और उर्दू-फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। उनको उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय थे द्य सीधे सादे पदों में संत कवि ने हृदय के भाव बड़ी सफाई से प्रकट किए हैं। इनका आत्मनिवेदन, दिव्य भाव और सहज भक्ति पाठकों के हृदय को उद्वेलित करते हैं। यह उनके पदों व साखियों में देखा जा सकता है -

अब विप्र परधान करहि दंडवति,
तरे नाम सरनाई दासा।

जैसे पद इसका साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि असमानता और अहंकार से युक्त समाज में रहकर रविदास जी अपने समय में एक ऐसे बेगमपुर (बेगमपुरा सहर को नाऊँ, दु:ख अन्दोख नहीं तिहि ठाऊँ) की परिकल्पना करते हैं, जहाँ किसी को कोई दु:ख न हो और सभी इनसान समान हों। केवल समान ही नहीं, बल्कि सभी को समान अवसर भी मिले।

वे मानते थे कि यदि हमारा हृदय निर्मल हो तथा परोपकार, दया, क्षमा आदि भावों से हमारे विचार प्रभावित हों, तभी ईश्वर की आराधना सफल हो सकती है। रविदास जी ने समानता और समरसता के आधार पर जो रचनाएँ दीं, वे ही एक नई सामाजिकता का गठन करती हैं। इनमें जड़ता, अंधविश्वास, अंधभक्ति के कई मूल्य ध्वस्त हुए और फिर इन सभी विकारों से रहित एक स्वस्थ समाज सामने आया। जात-पाँत व भेदभाव रहित समाज ही स्वविवेक के बल पर सही निर्णय ले सकता है।

रविदास भक्ति आंदोलन के एक ऐसे संत थे, जो जीवन भर श्रम की महत्ता पर जोर देते रहे। इनकी सर्वाधिक ऊर्जा अपने समय के पाखंड से लड़ने में खरच हुई, क्योंकि उन्हें पता था कि इसके बगैर समता, समानता व सहअस्तित्व की भावना को अर्जित नहीं किया जा सकता। उनके अनुसार, व्यक्ति को धार्मिक पाखंड करने के बजाय अंतर्मन की पवित्रता पर जोर देना चाहिए। माघ पूर्णिमा के अवसर पर हर वर्ष बनारस के सीर गोवर्धन में संत रविदास की स्मृति में बड़ा आयोजन होता है, जिसमें पूरे भारत से बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। संत रविदास के विचारों की छाप भारतीय मनोमस्तिष्क पर अमिट बनी रहेगी। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

भजन प्रतियोगिता

पूर्वी विभाग की कीर्तन मंडली की प्रतियोगिता इन्द्रप्रस्थ जिले के पाण्डव नगर के राधा कृष्ण मन्दिर में हुई जिसमें चारों जिले में जीती प्रथम व द्वितीय स्थान पर आई मंडलियों ने हिस्सा लिया जिसमें इन्द्रप्रस्थ जिले की मंडली प्रथम आई व द्वितीय मयूर विहार जिले की मंडली आई और तृतीय स्थान पर गांधी नगर जिला। राधा कृष्ण मंदिर द्वारा भोजन व अन्य व्यवस्था में पूर्ण सहयोग रहा जीती हुई मंडली अब प्रांत प्रतियोगिता में भाग लेंगी।

यमुना विहार विभाग द्वारा आयोजित भजन प्रतियोगिता 14.12.2022 को सुदामा पुरी केन्द्र पर आयोजित की गयी। 8 मण्डलियों ने भाग लिया । सुदामा पुरी की मंडली ने प्रथम स्थान प्राप्त किया । इस कार्यक्रम में जिले के सभी कार्यकर्ता तथा विभाग मंत्री उपस्थित रहे। अंत में श्रीमती वीना महतों जी ने बढ़िया कृष्ण भजन सुनाया जिससे सभी झूम उठे।

पश्चिमी विभाग - नांगलोई जिले द्वारा दिनांक 14.12.2022 को 6 भजन मण्डली ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में कमरूद्दीन नगर की टोली प्रथम स्थान पर रही।

कलंदर कॉलोनी में सहभोज का आयोजन

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 24 दिसंबर, 2022 को सहभोज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें केंद्र में अध्ययनरत्त बालिकाओं ने भाग लिया। सभी बालिकाओं ने अपने-अपने घर से भोजन लाया था। उस भोजन को उपस्थित लगभग 80 बालिकाओं के मध्य वितरित किया गया। सहभोज कार्यक्रम में बस्ती के विभिन्न वर्गों की बालिकाओं ने भाग लिया। जिसमें कंजर समुदाय तथा मुस्लिम बालिकाएँ भी सम्मिलित हुईं। भोजन मंत्र के साथ सहभोज का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ तथा सभी ने सहर्ष भोजन ग्रहण किया। इस प्रकार केंद्र पर सह भोज का कार्यक्रम सभी के साथ तथा सभी के सहयोग से आयोजित किया गया।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 जनवरी, 2023, प्रकाशन तिथि-5 जनवरी, 2023
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

मातृछाया : एक ईश्वरीय कार्य

फाइल फोटो

सेवा भारती दिल्ली द्वारा संचालित 'मातृछाया' में माता-पिता-विहीन बच्चों की देखरेख होती है और बाद में एक तय प्रक्रिया के पश्चात् उसे किसी पालक माता-पिता को दे दिया जाता है। ताकि उस बच्चे का लालन-पलन हो सके और आगे चलकर वह भी देश की सेवा कर सके। मातृछाया का नाम सुनते ही सामान्य व्यक्ति के मन में सबसे पहले एक सवाल उठता है कि उसके पास बच्चे आते कैसे हैं! इसको जानने के लिए हाल ही की एक घटना का उल्लेख आवश्यक है। बात अक्तूबर, 2022 की है। दिल्ली की एक पुनर्वास बस्ती में सुबह कूड़े के ढेर को उठाने के लिए एक जे.सी.बी. मशीन लगी हुई थी। अचानक जे.सी.बी. के सहायक ने ड्राइवर को गाड़ी रोकने के लिए कहा। क्योंकि उसे कूड़े के ढेर में पड़ी पोटली में एक बच्चे का हाथ दिखाई दिया। जे.सी.बी. के रुकते ही सहायक ने उस पोटली को खोला तो वह दंग रह गया। उसमें नवजात एक बच्ची पड़ी हुई थी। इसके बाद उसने बच्ची को उठाया और वहां खड़े लोगों ने पुलिस को सूचित किया। बच्ची लगभग 2 दिन की थी और बहुत ही दयनीय अवस्था में थी। पुलिस ने बच्ची को तुरन्त पास के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया। डाक्टरों के अभिनंदनीय प्रयासों से बच्ची के स्वास्थ्य में सुधार हुआ। करीब 25 दिन इलाज के बाद चाईल्ड वेलफेयर कमिटी ने मातृछाया से संपर्क किया। इसके बाद मातृछाया के श्री प्रेम जी ने बच्ची को लाने की व्यवस्था की। 9 नवंबर, 2022 को सायं 4.00 बजे मातृछाया परिसर में बच्ची का हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया गया। गेट पर ही मातृछाया के सभी सदस्यों ने बच्ची की आरती उतारी और फूलों से उसका स्वागत किया। पैरों पर अलता लगाकर उसके पैरों के निशान कागज पर लिए गए। तत्पश्चात् हलवे का प्रसाद सभी सदस्यों को बांटा गया। आज यह बताने में गर्व हो रहा है कि मातृछाया में कार्यरत सभी यशोदाओं के अथक प्रयासों और असीम प्यार से आज वह बच्ची पूर्णतया स्वस्थ है। उसका वजन मात्र 1 महीने में बढ़ गया है। मातृछाया के सभी सदस्य आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे हैं कि जिस प्रकार से मातृछाया में पूर्व के वर्षों में 351 बच्चों को अपने नए माता-पिता मिले और उनका भविष्य उज्जवल हुआ, वैसे ही इस बच्ची को भी कोई पालक माता-पिता मिल जाए, ताकि इसका भी भविष्य सुरक्षित हो।

सौन्दर्य और सिलाई परीक्षा

पूर्वी विभाग में इन्द्रप्रस्थ जिले के श्री राम सेवा केन्द्र पर 22 एवं 23 दिसम्बर को प्रातः 11.00 बजे से परीक्षा का आयोजन किया गया। प्रथम दिन थ्योरी की आब्जेक्टिव परीक्षा ली गई। अगले दिन अपने कार्यों में प्रशिक्षित अध्यापिकाओं ने इनकी परीक्षा ली। विद्यार्थियों को कार्य करते हुए उन्होंने देखा और परखा। एक-एक को अलग बुलाकर मौखिक परीक्षा भी ली। उनकी त्रृटियों को इंगित करते हुए बेसिक न्यू कार्यशैली को समझाते हुए समाधान भी दिये।

केशव पुरम विभाग में तुलसी पूजन

सेवा भारती केशव पुरम विभाग स्थित, जखीरा, राखी मार्किट में बहुत ही पवित्रता के साथ तुलसी जी का पूजन किया गया और उनके बारे में बताया गया। उसके बाद शिव बस्ती केन्द्र पर गये वहां भी शिक्षिका, बच्चों इनके परिवार से बात-चीत की गई। इस अवसर पर बच्चों को साफ-सफाई एवं माता-पिता और प्रभु को स्मरण के विषय में बताया गया।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।